www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेद प्रतिपादित मानवीय मूल्यों को
जन-जन तक पहुँचाने हेतु कार्यतत्पर
सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

वेदोद्धारक, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का
मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

वर्ष १३ अंक ८ अगस्त २०१३

वेद, व्याकरण, दर्शन के प्रखर विद्वान्, अनुसन्धाता

स्मृतिशेष आचार्य डॉ. विजयपालजी

भावपूर्ण श्रद्धांजलि !

www.thearyasamaj.org

सभा द्वारा आयोजित '१२ वां प्रान्तीय पुरोहित प्रशिक्षण शिविर'-आर्य समाज, गांधी चौक, लातूर

विद्वान् प्रशिक्षक व सभा पदाधिकारियों के साथ पुरोहित प्रशिक्षणार्थी

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा का

मासिक मुखपत्र

वैदिक गर्जना

सृष्टि सम्वत् १,९६,०८,५३,११४ कलि संवत् ५११४ विक्रम संवत २०७०

दयानन्दाब्द १८९ श्रावण १० अगस्त २०१३

प्रधान सम्पादक

राजेन्द्र दिवे

(मो. ०९८२२३६५२७२)

सम्पादक

प्रा.डॉ.नयनकुमार आचार्य

(मो. ०९४२०३३०१७८)

सहसम्पादक-डॉ.ब्रह्ममुनि वानप्रस्थ (मो. ९४२१९५११०४), प्रो.देवदत्त तुंगार (०९३७२५४१७७७)

प्रा.भूदेव विद्यालंकार, प्रा. सत्यकाम पाठक, ज्ञानकुमार आर्य

अनुक्रम

-हिन्दी विभाग-

१) श्रुतिसन्देश........२

२) श्रावणी का शुभ संकल्प........३

३) हम संस्कृत क्यों सीखें ?........४

४) आदर्श सत्पुरूष-योगेश्वर श्रीकृष्ण........६

५) महाराष्ट्र में श्रावणी वेदप्रचार के अनुभव........८

६) कर्मयोगी-पू. बापुसाहब वाघमारे........१०

७) समाचार दर्पण........१५

८) शोक समाचार........१८

-मराठी विभाग-

१) उपनिषद सन्देश/ दयानंदाची अमृतवाणी........२०

२) आदि वेदमाऊली-देई सर्वभूतां सावली........२१

३) श्रावणी पर्व...शिकवी स्वाध्यायधर्म........२३

४) गाथा वाचू दयानंदांची........२७

५) वार्ता विशेष........२८

६) खास वाचकांसाठी-म.दयानंदाचे कॉमिक्स (मराठी)........३०

● प्रकाशक ●

मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,

सम्पर्क कार्यालय-आर्य समाज

परली-वैजनाथ ४३१५१५

● मुद्रक ●

वैदिक प्रिन्टर्स

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य समाज,परळी-वै.

-वैदिक गर्जना के शुल्क-

वार्षिक - रू. ५०/-

आजीवन रू. ५००/-

इस मासिक पत्रिका में प्रकाशित लेखों तथा विचारों से सम्पादक मण्डल सहमत हो, यह अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र परली-वैजनाथ जि.बीड ही होगा

www.thearyasamaj.org

श्रुति संदेश

वेदाध्ययन का फल

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः संभृतं रसम ।
छछछतस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥

पदार्थ :- (यः) जो व्यक्ति, उपासक (ऋषिभिः) ऋषियों द्वारा (समु, भृतम) धारण की गई (पावमानीः) अन्तःकरण को पवित्र करनेवाली (रसम्) वेद की ज्ञानमयी ऋचाओं का (अध्येति) अध्ययन करता है ।(सरस्वती) वेदवाणी (तस्मै) उस मनुष्य के लिए (क्षीरम्) दूध, (सर्पिः) घी (मधु उदकम्) मधुर जल, शरबत आदि (दुहे) प्रदान करती है । **(ऋ.९/६७/३२,साम.११९९)**

भावार्थ :- वेद के अध्ययन और उसके अनुसार आचरण करने से मनुष्य के जीवन-निर्वाह के लिए सभी उपयोगी वस्तुओं की प्राप्ति होती है । जो व्यक्ति वेद का स्वाध्याय करते हैं, उन्हें दूध और घी आदि शरीर के पोषकतत्वों की कमी नहीं रहती । वैदिक विद्वान जहाँ जाते हैं, वहीं घी, दुग्ध और शर्बत आदि से उनका स्वागत और सत्कार होता है । **(स्वामी जगदीश्वरान्द सरस्वती कृत 'वेदसौरभ' से साभार)**

भारत वर्ष के शताधिक आयु प्राप्त सुप्रसिद्ध गुरूकुल शिक्षा संस्थान
गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार (उत्तराखण्ड) के 'कुलपति' पद पर
आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्, गवेषक, लेखक व 'विशुद्ध मनुस्मृति' के रचयिता

प्रो.डॉ.सुरेन्द्रकुमारजी का

सर्वसम्मति से चयन होनेपर उनका

हार्दिक अभिनन्दन

शुभेच्छुः - महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

श्रावणी उपाकर्म पर्व, स्वतंत्रता दिवस, श्रीकृष्णजन्माष्टमी

इन पावन पर्वों के उपलक्ष्य में सभी आर्यजनों को

हार्दिक शुभकामनाएं

तथा

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभाद्वारा आयोजित
राज्यस्तरीय 'मानवजीवन कल्याण वेदज्ञानप्रचार अभियान'
के लिए आमंत्रित सभी विद्वानों व भजनोपदेशकों का

हार्दिक अभिनन्दन

www.thearyasamaj.org

सम्पादकीयम्

श्रावणी का शुभसंकल्प

भारतवर्ष में मनाये जानेवाले सभी पर्वों में **श्रावणी** का विशेष महत्व है। विचारपरिवर्तन व आध्यात्मिक उन्नयन की दृष्टि से इसे हम क्रान्तिपर्व भी कह सकते हैं। क्योंकि हमारे अन्तःकरण में आ पडे अन्धकार के कहरे प्रखर ज्ञानप्रभा के माध्यम से हटाने का पवित्र कार्य इस पर्व से होता है। वेद के स्वाध्याय, मनन व चिन्तन से जहां हम अपने जीवन को समुज्ज्वल बनाते हैं वहीं समाज में नवविचारों को प्रसारित भी कर सकते हैं

श्रावणी हमें ईश्वरीय आनन्द से जोडती हैं, क्योंकि इस पर्व पर हम जिन वेदादि शास्त्रों का श्रवण या स्वाध्याय करते हैं , वे उसी परमानन्द को प्रकाशित करनेवाले वैश्विक ज्ञान के आदिस्त्रोत हैं। हमारा वेदज्ञान से दृढसंबंध स्थापित हो, हम सन्मार्गगामी बनें,इस श्रावणी पर्व पर केवल मानवता से उंचे उठकर **देवत्व** को प्राप्त हो, यही श्रावणी का वास्तविक सन्देश हैं। आज सारी दुनियां अविद्या, अधकार, वेदाव त्रिविध तापों से त्रस्त हैं। धन-सम्पदा के भण्डार खुले रहते हुए तथा सुख के सभी साधन उपलब्ध होते हुए भी आज सारा संसार परेशान है। जिसके पास कुछ नहीं वह कंगाल भी दुःखी और जिसके पास सब कुछ है, वह धनवान भी महादुःखी। ऐसा क्यों हो रहा है ? इसका कारण है सद्विचारों का न होना। क्योंकि सुख या दुःख का संबंध भौतिक धन से नहीं बल्कि विचारों से होता हैं। श्रावणी हमें गिरने से बचाती हैं, और वैदिक सुविचारों से जगाती है। लगभग ५ सहस्त्र वर्षों के बाद हमें महर्षि दयानन्द के परमपुरूषार्थ व कठोर साधना के फलस्वरूप इन पावन विचारों का परिसस्पर्श हुआ है।अन्यथा वेद के सत्यस्वरूप को जान पाना हम सबके लिए सुदुष्कर था। इस लिए श्रावणी पर्व की मूलभाव न कर उन्हें विविध माध्यमों से विश्वव्यापक नहीं बनायेंगें और प्रतिवर्ष केवल इस पर्व के आयोजन मात्र की परिपाठी चलाते रहेंगें, ता हमारा श्रावणी पर्व मनाना अन्यों की भांति केवल परम्परावादी सिद्ध होगा। महर्षि ने वेदों के पढने-पढाने व सुनने व सुनाने पर बल दिया है। पढने व सुनने का मतलब केवल मुख से पढना या कानों से सुनना नहीं, बल्कि वेदों के दिव्य अर्थ को योगसाधना के माध्यम से आत्मानुभूत कर ईश्वरीय आनन्द को प्राप्त करना हैं। साथ ही पढान व सुनाने का भाव सारी दुनियां तक इन विचारों को पहुचांना है, जिसकी सम्प्रति सुख,शान्ति व आनन्द की अभिलाषा रखनेवाले प्रत्येक मानव को उत्कट चाह हैं। अतः श्रावणी के उपलक्ष्य में हम वेदसुरभि को विश्व के कोने-कोने में पहुंचाने शुभ संकल्प करें।

-डॉ.नयनकुमार आचार्य

www.thearyasamaj.org

संस्कृत दिवस (२० अगस्त) पर विशेष-

हम संस्कृत क्यों सीखें ?

- स्वामी विष्वङ् परिव्राजक

सुख-शान्ति, तृप्ति, निर्भयता, स्वतंत्रता की प्राप्ति, दुःखों से मुक्ति, राग, द्वेष आदि क्लेशों से रहित होने को आधार प्राचीन संपूर्ण वैदिक वाङ्मय है। और इस पावन ज्ञानभण्डार स्वरूप वैदिक वाङ्मय का मूलभूत आधार संस्कृत भाषा है। आइये इसके विषय में कुछ विशेष महत्त्वपूर्ण बातों की जानकारी प्राप्त करें।

१. संस्कृत भाषा स्वाभाविक, सरल, मनोहर, सुबोध, लालित्य, बुद्धिमत्तापूर्ण एवं वैज्ञानिक भाषा है।

२. यह किसी भी व्यक्तिविशेष, देशविशेष, कालविशेष, सम्प्रदायविशेष, समुदायविशेष की धरोहर न होकर सूर्य, चन्द्र, जल, वायु के समान मनुष्यमात्र के लिए लाभदायक है।

३. यह भाषा विश्व की सभी भाषाओं की जननी है।

४. संस्कृत व्याकरण एक समृद्ध, सुनिश्चित, नियमित, सर्वाधिक शब्द समुदाय से युक्त एवं शब्द-अर्थ सम्बन्ध का बोध कराने में अद्वितीय रूप से सक्षम है।

५. यह आधुनिक तकनीकी के अनुकूल होने से विश्व के वैज्ञानिकों द्वारा कम्प्यूटर के लिए चुनी जाने योग्य सब भाषाओं में सर्वाधिक उपयुक्त सिद्ध हुई है।

७. यह तीनों कालों में आदि सृष्टि से लेकर वर्तमान तथा भविष्य में भी एक ही स्वरूप में रहने वाली अपरिवर्तनशील, अजम-अमर अर्थात् विकार से रहित शुद्ध और नित्य अर्थात् चिरस्थायी है।

८. वेद, उपवेद, ब्राह्मण, ६ वेदांग, ६ दर्शनशास्त्र, स्मृति ग्रंथ, रामायण, महाभारत, इत्यादि समस्त शास्त्रों का आधार एक मात्र संस्कृत ही है।

९. बडे से बडे पदार्थ जैसे-सूर्य, चन्द्र, नक्षत्रादि तथा छोटे से छोटे पदार्थ जैसे अणु, परमाणु, सत्व, रज, तम अर्थात् प्रकृति पर्यन्त सभी पदार्थों का यथार्थ ज्ञान संस्कृत भाषा से ही संभव है।

१०. उचितानुचित, न्यायान्याय, कर्तव्याकर्तव्य, हानि-लाभ, हिताहित, धर्माधर्म, पाप-पुण्य, सदाचार-अनाचार, सुख-दुःख, ग्राह्य-त्याज्य आदि का पूर्ण ज्ञान संस्कृत भाषा के बिना संभव नहीं है।

११. मानव निर्माण की यथार्थ शैली या पद्धति सोलह संस्कारों द्वारा संभव है। इन संस्कारों से मनुष्य सुसंस्कृत होकर देवत्त्व को प्राप्त होता है। इन सोलह संस्कारों

का परिज्ञान शुद्ध व निर्दोष रूप से संस्कृत भाषा के माध्यम से ही होता है।

१२. लौकिक तथा आध्यात्मिक उन्नति की पराकाष्ठा संस्कृत भाषा के बिना संभव नही

१३. जीवात्मा को अपने अस्तित्व, सत्य स्वरूप एवं स्वशक्तियों का परिज्ञान संस्कृत भाषा के माध्यम से अतिशीघ्र व सुगमतापूर्वक हो सकता है, जिन्हें भली-भांति समझने के उपरान्त ही वह ईश्वर से संबद्ध होकर नित्यानन्द को प्राप्त हो।

१४. मानव जीवन की सफलता का आधार मुख्य रूप से ईश्वर है। ईश्वर का यथार्थ स्वरूप,उसकी महत्ता, उसकी उपयोगिता, उसके साथ हमारा सम्बन्ध तथा उसके गुण-कर्म-स्वभावों के अनुरूप व्यवहार करने से लाभ एवं विपरीत आचरण करने से हानियाँ इत्यादि बातों का ज्ञान संस्कृत भाषा के परिज्ञान के बिना अत्यन्त कठिन व असंभव सा है।

१५. ईश्वर प्राप्य अर्थात् साध्य है, जीव प्राप्तकर्ता अर्थात् साधक है एवं समस्त कार्य जगत् साधन है, यह संस्कृत भाषा से ही अतिशीघ्र व सुगमतापूर्वक ज्ञात होता है

१६. ईश्वर प्राप्ति का एक मात्र उपाय है अष्टांग योग और अष्टांग योग का सम्पूर्ण विधि-विधान संस्कृत भाषा के ग्रंथों से ही अतिशीघ्र व सुगमतापूर्वक ज्ञात होता है।

१७ 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात् विश्व बन्धुत्व, प्राणघाती शत्रुओं के प्रति भी हित की कामना एवं प्राणिमात्र को अपनी आत्मा के तुल्य समझना इत्यादि का ज्ञान संस्कृत भाषा के अध्येता को ही प्राप्त हो सकता है।

१८. आदिसृष्टि से वर्तमान पर्यन्त तर्क व प्रमाणों के आधार पर गवेषणा करने वाले विवेकी तत्त्वदर्शियों, ऋषियों, मुनियों, मेधावियों के चिन्तन, मनन व निदिध्यासन को सर्वाधिक उत्कृष्ट, समृद्ध एवं परिपुष्ट आधार प्रदान करनेवाली यही भाषा है।

१९. अन्त में यदि कहा जाय कि मनुष्य जीवन का सर्वस्व अर्थात् शान्ति, निर्भयता, स्वतंत्रता आदि की प्राप्ति संस्कृत भाषा में ही सन्निहित है, तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।

-ऋषि उद्यान, अजमेर (राजस्थान)

राज्य में श्रावणी पर्व उत्साह से शुरू...

हर्ष का विषय है कि महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में राज्य की लगभग १२५ आर्य समाजों में मानव जीवन कल्याण वेदप्रचार अभियान के अन्तर्गत पूरे श्रावण मास में **श्रावणी वेदप्रचार महोत्सव** मनाये जा रहे हैं। सोलापूर, पुणे,परभणी, रामनगर लातूर, उमरगा आदि आर्यसमाजों में ये पर्व सम्पन्न हो चुके हैं। इस श्रावणी पर्व हेतु लगभग ५५ विद्वानों व भजनोपदेशकों आमंत्रित किया गया है। गत ७ अगस्त से आरम्भित इन पर्वों का समापन दि. ५ सितम्बर को होगा।

www.thearyasamaj.org

आदर्श सत्पुरूष-योगेश्वर श्रीकृष्ण

-सौ. विद्यावती किशनसिंह आर्य

भारतीय संस्कृति में श्रीराम और श्रीकृष्ण का स्थान बहुत ही उंचा है । दोनों भी पूजनीय माने जाते हैं। श्रीरामजी को होकर लाखों वर्ष हुये, परंतु भारतीय जनमानस में मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीरामजी के प्रति आदरभक्ति व प्रेमभावना अब भी चरमसीमा पर हैं।

दूसरे महापुरूष योगेश्वर श्रीकृष्णजी हैं।उनका कार्यकाल भी ५ हजार साल पहले का है। तब भारत धन, धान्य, संपत्ति, साहस, वीरता इत्यादि गुणों से ओतप्रोत था। परंतु मोहवृत्ति, तामसवृत्ति भी समाज में बढी हुयी थी । पितामह भीष्म, आचार्य द्रोण, कृपाचार्य इत्यादि (ब्राह्मण) विद्या पढानेवाले आचार्यगण भी अधर्म के पक्ष में थे। ऐसे समय में श्रीकृष्णजी ने धर्म का पक्ष लिया था।

श्रीकृष्णजी महाभारत काल के श्रेष्ठ शासनकर्त्ता थे। धर्म, अध्यात्म, दर्शन तथा राजनीति के ज्ञाता थे । उस समय भारत के राजाओं की पूरे विश्वपर सत्ता थी, जिसे कि चक्रवर्ती राज्य कहा जाता है। परंतु उस समय का भारत देश उत्तर में गंधार (आज का अफगाणिस्तान) से लेकर दक्षिण की सह्याद्रि पर्वतमाला तक, क्षत्रियों के स्वतंत्र राज्यों में विभक्त हो चुका था। बलशाली, चक्रवर्ती सम्राट न होने से मांडलिक राजा स्वेच्छाचारी, अधर्मी, अन्यायी हो चुके थे । इसमें मथुरा का कंस, मगध का जरासंध, चेदिदेश का शिशुपाल तथा हस्तिनापुर के कौरव आदि प्रमुख राजा थे। ये सभी दुष्ट, विलासी, दुराचारी, उन्मत्त शासक थे । श्रीकृष्णजी ने अपनी चतुराई, नीतिमत्ता, कूटनीति तथा सूझ-बूझ से इन सभी अन्यायी राजाओं का नाश किया व धर्मपारायणवादी न्यायी, अजातशत्रु महाराज युधिष्ठिर (धर्मराज) को आर्यावर्त्त के सिंहासन प्रर बिठाया और इस भारतवर्ष में पुनश्च चक्रवर्ती धर्मराज्य स्थापित किया। समग्र राष्ट्र में क्रांति का शंखनाद करनेवाले लोकनायक श्रीकृष्ण ही थे।

आर्य-जीवनचर्या का संपूर्ण विकास हमें श्रीकृष्ण के चरित्र में दिखाई देता है। अपने आदर्श आचरण से वे राष्ट्रपुरूष कहलाते हैं । उन्हें **भगवान श्रीकृष्ण** भी कहा जाता है। भग यह संस्कृत का शब्द है। संपूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, श्री, ज्ञान, वैराग्य

www.thearyasamaj.org

इन अर्थों में भग शब्द प्रयुक्त होता है। श्रीकृष्णजी बुद्धिमान, कर्तृत्वसम्पन्न, ध्येयनिष्ठ, पराक्रमी, महापुरूष थे। सत्यपर उनकी पूरी निष्ठा थी। मन का संयम ही 'योग' कहलाता है। वे बडे संयमी व योगविद्या के ज्ञाता थे। इसीलिए उन्हें **'योगेश्वर'** कहा जाता है। उन्होंने स्वार्थरहित समाजसेवा की। पूतना जैसी राक्षसी गुणों की स्त्री का संहार किया। कालिया का मर्दन करके गोकुलवासियों को उसके अत्याचारों से बचाया। उन्हें परिश्रम करने हेतु प्रेरित किया। श्रीकृष्ण ने जनता का अंगुलिनिर्देश याने कि योग्य मार्गदर्शन किया। 'अंगुलिपर गोवर्धन उठाना' यह बात रूपक है। कौरव-पांडवों का युद्ध रोकने हेतु उन्होंने प्रयत्न बहुत किये, परंतु घमंडी दुर्योधन ने उनकी एक नही मानी। अन्त में श्रीकृष्णजी ने पाण्डवो का तथा सत्य धर्म का पक्ष लिया और उन्हें पूरा सहयोग दिया।

आत्मविश्वास गंवाये हुए, मोह में फंसे हुए अर्जुन को उन्होंने गीतोपदेश दिया। जो कि संसार का श्रेष्ठ ग्रंथ माना जाता है। गोपालन करने तथा ईश्वरकी भक्ति करने का संदेश कृष्णजी ने दिया है। मित्रप्रेम के भी वे उच्चतम आदर्श है। कृष्ण-सुदामा की कथा सब जानते हैं। ऐसे आदर्श व्यक्तित्त्व के धनी श्रीकृष्ण जी को वर्तमान समय में शृंगारिक पुरूष, माखनचोर आदि गलत विशेषण लगाये गये है। ऐसा वर्णन तो मूल महाभारत में कहीं पर भी नहीं है। विकृत मनोवृत्ति के लोगों ने बाद में यह मिलावट की हैं। श्रीकृष्णजी ने तो गृहस्थाश्रम में रहते हुए भी बारह वर्षों तक ब्रह्मचर्य का पालन किया था। और तब जाकर **प्रद्युम्न** जैसे तेजस्वी वीर पुत्र को जन्म दिया, जो कि प्रतिकृष्ण ही था। पुराणों में कृष्णजी का वर्णन सरासर झूठ है। उन्होंने अपनी नस-नाडियों को बश में किया था, न कि नारियों को ! समाज में आज गलत तरीके से दहिहंडी कार्यक्रम भी मनाया जाता है। इन गलत दोषों को छोडकर हमें कृष्ण के दूसरे श्रेष्ठ रूप को अपनाना चाहिए। उनके आदर्शों पर चलना है। प्रतिवर्ष आनेवाली श्रीकृष्णाष्टमी हमें गोरक्षा, गोपालन, संगठन बनाना, दुष्टों का नाश करना, समाज में विद्यमान गलत रीतियों को बदलना आदि बातों पर अमल करने की प्रेरणा देती है।

-वीटभट्टी के पास, कुमठा नाका, सोलापुर

- पाठकों से निवेदन -

'वैदिक गर्जना' के प्रबुद्ध पाठकों को विशेषकर आजीवन व वार्षिक ग्राहकों, आर्य समाजों तथा विद्वानों से निवेदन है कि आप सभी को **मार्च, अप्रैल, मई, जून, जुलाई २०१३** के अंक इकठ्ठे भेजे जा चुके हैं। यद्यपि आपको उपर्युक्त अंक न मिलें हों, तो आप तुरन्त चलभाष या पत्रद्वारा हमें सूचित करें। वे सभी अंक आपको दुबारा भेजे जाएंगे।

www.thearyasamaj.org

महाराष्ट्र में श्रावणी वेदप्रचार के अनुभव

-डॉ. विश्वपाल वेदालंकार (दाधिया-राज.)

सम्पूर्ण विश्व में वेद प्रचार का कार्यक्रम आर्यजन अपनी विचारधारा के अनुरूप अधिक से अधिक करवाने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु महाराष्ट्र का वेदप्रचार जो एक महिने चलता है, उसमें प्राचीन युग की अनुभूति होती है। महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा के अधिकारी सम्पूर्ण प्रान्त में वेदप्रचार की रूपरेखा तैयार करते हैं और तदनुसार विद्वानों को आमन्त्रित करते हैं। इस कार्य में प्रमुख भूमिका श्री डा. ब्रह्ममुनिजी की रहती है।

मुनिजी-एक परिचय

डा. ब्रह्ममुनिजी का पूर्व नाम श्री डॉ. सुग्रीवजी काले है और वे परली वैजनाथ जि.बीड के वैद्यनाथ कॉलेज में प्रोफेसर थे। प्रोफेसरों के **सर** कहने का प्रचलन है, इसलिये आज भी **काले सर** के नाम से उन्हें सभी जानते हैं। उनकी धर्मपत्नी भी कॉलेज में लेक्चरार रही है, जो अब रिटायर हो चुकी है। उनके तीन सुपुत्र हैं, जो ऊंची पोस्टों पर कार्यरत हैं। अब वानप्रस्थाश्रम में आने के बाद भी सारा परिवार उनके हर कार्य में पूरा सहयोगी है। व्यक्तिगत रूप में डा.साहब बहुत बडे विद्वान हैं। लेखक, धाराप्रवाह वक्ता, कर्मठ कार्यकर्त्ता, वात्सल्यपूर्ण व्यवहार, पूर्ण त्यागमय जीवन और **अहर्निशं सेवामहे** की साक्षात मूर्ति हैं।

वेदप्रचार कार्य -

श्रावणी मास के वेदप्रचार में वे सम्पूर्ण महाराष्ट्र में व्यापक बनकर दिखाई देते हैं। इस सारे वेदप्रचार की वे धुरी हैं। कौन विद्वान् किन दिनों में कहां कार्यरत है, इस बात को ध्यान में रखकर प्रत्येक विद्वान को प्रत्येक स्थानपर जाकर सम्भालना, प्रवचन के शुरू में ही पहुंचकर प्रवचन शैली का निरीक्षण करना और सलाह देना तथा समाजों में कहीं जरा भी मनमुटाव हो, तो उसको अपने प्रभाव से तुरन्त समाप्त कर समाज को पुनर्जीवन प्रदान करना, विद्वानों से अधिक से अधिक काम लेने के लिये प्रेरित करना, उनके मान सम्मान का पूरा ध्यान रखना और रखवाना, व्यवस्था करवाना, दान दक्षिणा हेतु चन्दा एकत्रित करवाना और ठीक समय पर जारी यथायोग्य उसका वितरण करना इन कामों में उनकी जरा भी लापरवाही देखने को नहीं मिलती। इस काम के लिये जो उनका अथक परिश्रम है, वह बहुत ही आश्चर्यजनक है। रेलयानों में भयंकर भीड में बिना रिजर्वेशन के यात्रा करना बहुत मुश्किल है। परन्तु वे महीनों तक महाराष्ट्र के इस छोर से उस छोर तक बिना रूके निरीक्षण करते और सम्भालते हैं। स्वयं का यान या प्रतिनिधि सभा की कोई गाडी इस कार्य हेतु उनके पास नहीं है। एक छोटा थैला लेकर ७५ वर्ष की अवस्था में निरन्तर

www.thearyasamaj.org

पथिक बनें रहना तथा मध्य - मध्य में दिल्ली, कोलंकत्ता आदि नगरों का विशेष परिस्थिति में दौरा करना इस महापुरूष का अदम्य साहस भरा कार्य है। जहां तक मेरा सम्बन्ध इस कार्य में उनके साथ रहा, वह आध्यात्मिक विषय को लेकर था। योग और वेद मेरे जीवन के अंग हैं और इसी विषयपर उनकी मैंने गहन रूचि देखी, इसलिये मैं उनका विशेष कृपापात्र रहा।

महाराष्ट्र प्रान्त की जीवन शैली-

आचार्य चाणक्य कहते हैं -

न विप्रपादोदककर्दमानिन
वेदशास्त्रध्वनिगर्जितानि ।
स्वाहास्वधाकार विवर्जितानि
स्मशानतुल्यानि गृहाणि तानि ॥

अर्थात् वे घर स्मशान तुल्य हैं, जिनमें विद्वानों के पैर धोने से कीचड न बना हो, वेद शास्त्र की ध्वनि जहां गर्जित न होती हो, पंच महायज्ञों का जहां अभाव हो।

इस श्लोक को चरितार्थ होते हुये मैंने अब तक केवल महाराष्ट्र में ही देखा है। पंच महायज्ञ और विप्रपूजा के साथ परिवार में सभी बडों को छोटों का उनके चरणों में सिर टेककर नमस्ते करना। यहां तक छोटे बच्चे भी अपने बडे भैय्या को इसी प्रकार अभिवादन करेंगें। इसका परिणाम हर घर में सुख-शान्ति, परस्पर प्यार, निश्छल, निष्कपट जीवन, अतुल सहनशक्ति, चरित्र का पालन, दुर्व्यसनों से दूरी आदि बातें दिखाई देती हैं। सामाजिक जीवन में भी परस्पर सभी का आदर स्नेह भाव, परन्तु वीरता में शिवाजी और धर्म के अत्यधिक रूचि दृष्टिगोचर होती है। पर्दाप्रथा तो महाराष्ट्र में सूंघने को भी नहीं मिलती।

अनूठा श्रावणी वेदप्रचार-

सुबह यज्ञ, संध्या के बाद एक घण्टा संगीत, एक घण्टा प्रवचन इसी प्रकार सायंकालीन कार्यक्रम रहता था। जो बिना रूकावट के लगातार चलता था। इसके अतिरिक दिन के समय स्कूलों व कॉलेजों में और परिवारों में कार्यक्रम चलते रहते थे।

मेरे अनुभव-

मुझे महाराष्ट्र में वेदप्रचार हेतु तीसरी बार जाने का शुभ अवसर मिला। इसके पहले साप्ताहिक प्रचार हेतु धुलिया गया था। पिछले वर्ष पूरे एक मास के वेदप्रचार का सौभाग्य मिला। जिसमें अधिकतर साप्ताहिक आयोजन होते थे। छोटी समाजों में तीन दिन और दो दिन भी लगाये। लोगों की यज्ञों में लिये जाते व्रतों और प्रवचन के पश्चात् विशेष बातों पर शंका-समाधान के रूप में जिज्ञासा की प्रवृत्ति अनुभव होती थी। साप्ताहिक कार्यक्रमों में एक विद्वान को जो आत्मतुष्टि मिलती है, वह बहुत उपदेशक और एक या दो दिन का जलसा खानापूर्ति सी लगती है। मै महाराष्ट्र के वेदप्रचार के कार्यक्रम से पूर्णतया सन्तुष्ट हूं। मैं चाहता हुं कि वर्षभर में एक महीने के लिए सभी आर्य प्रतिनिधि सभाएं ऐसा आयोजन करें, तो वेद और महर्षि दयानन्द के ऋण से मुक्ति मिलेगी महर्षि दयानन्द के ऋण से मुझे मिलें।

●●●●

www.thearyasamaj.org

श्रावणी पर्व पर एक अनूठे वेदप्रचारक का प्रेरक जीवन-

कर्मयोगी-पूज्य बापुसाहब वाघमारे

- सौ.नलिनी माधव देशपाण्डे

जैसे प्रतिदिन उदित होनेवाला सूर्य नित्य नूतन होता है, पुराना नहीं होता तथा नित्य प्रवाहित होनेवाला पानी पुराना नहीं होता, स्वच्छ और पवित्र ही होता है, उसी प्रकार कुछ व्यक्तियों की यादें नित्य नूतन ही लगती हैं । चाहे वह व्यक्ति हमें छोडकर चला भी जाये, किन्तु ऐसा लगता है कि वह आज भी हमारे साथ है । यादों व विचारों के सहारे उनके आदर्श, उनके गुण अपने अन्तःकरण को नित्य प्रवाहित करते रहते हैं। आज भी हम आर्य परिवार के लोग निलंगा (महाराष्ट्र) निवासी परम पूज्य बापुसाहब वाघमारे को याद करते हैं।उनके आदर्श, उनका चलना-बोलना, विचार, प्रवचन, उनका संगठन कौशल्य आदि बातें कैसी थी ? कितना भी अपरिचित व्यक्ति क्यों न हो उनको वे अपना बना लेते थे। हम लोग एक समय औरंगाबाद मे रहते थे । सन् १९७२ से १९८५ तक औरंगाबाद में उनके सान्निध्य का हमें लाभ मिला। सनातन पौराणिक परिवार के होकर भी हमें आर्य समाज के विचारों में परिवर्तित कराने का सम्पूर्ण श्रेय पू. वाघमारे जी को ही जाता है। इस प्रक्रिया में उन्होंने कभी भी एक शब्द से भी हमें यह नहीं कहा कि **आर्य समाज से जुड जाओ** । बस ! इतना कहते थे कि **'मेरे साथ चलो ।'** उनके आचरण का ही प्रभाव था कि हम कब आर्य समाजी बन गए, हमें यह पता ही नहीं चला। आज पूरे २८ वर्ष हो गए, वे हमसे जुदा होकर ! इसके उपरान्त भी हमारी वैदिक विचारधारा की यात्रा आज भी उत्साह से कार्यरत है। क्या कारण था ? ऐसा क्या था उनके आचरण, विचारों व आदर्शों में ? जिनके कारण अनेकों परिवारों का इतिहास व भविष्य भी बदल गया । आजकल आर्य समाज में इस प्रकार के व्यक्तित्त्व कम हो रहे हैं। इस अवसर पर जब मैं पीछे मुडकर मेरे ही जीवन को देखती हूं , तो विश्वास नहीं होता कि वह कौन सा पारसमणि था, जिसने हमारे जीवन की दिशा बदल दी।

पूज्य बापुसाहब वाघमारे, हम जिन्हें **काका** कहते थे। वे मुझे रिश्ते में भी काका (मौसी के पति) लगते थे, उनसे परिचय तो बचपन से ही था, किन्तु विवाह के उपरान्त मैने जब औरंगाबाद में कदम रखा, तो वे भी उस समय पदोन्नति हो कर जिला पुलिस उपाधीक्षक बनें और औरंगाबाद में ही आये। तब से यहां पर हमारा उनसे अधिक सम्पर्क बढता गया।

www.thearyasamaj.org

वे अपने कार्यालयीन काम के अतिरिक्त व्याख्यान देते थे। वे एक उत्तम व्याख्याता थे। उनका व्याख्यान मधुर वाणी के साथ ही विनोदप्रचुर होता था। इसलिए सब को अच्छा लगता था। अभी मेरा घर संसार प्रारम्भ हुआ था, फिर भी वे कहते थे - **'विद्वानों के विचार सुनो !'** वे उस समय वहां के नये प्रमुख पुलिस अधिकारी थे और तभी एक नया अत्यंत जटिल प्रकरण हुआ था, जो कि **'मानवत हत्याकाण्ड'** के नाम से प्रसिद्ध हुआ था। उसके वे यशस्वी पुलिस अधिकारी नियुक्त होने से उन्हें वी.आय.पी. का दर्जा प्राप्त था। फिर भी वे हमारे जैसे सामान्य परिजनों को अपने साथ ले जाते थे। वाघमारे काका की यादें आज भी मुझे उत्साहित करती हैं, क्योंकि उनका व्यक्तित्त्व ही प्रभावशाली था। जहाँ भी गए, वहाँ का माहौल वे एकदम बदल डालते थे। कितना भी गंभीर व्यक्ति क्यों न हो, उनका सान्निध्य पाकर वह हंसेगा नहीं, यह हो ही नहीं सकता था। आजकल सर्वत्र सामाजिक नीतिमूल्यों का अभाव होता दीख रहा है। आपराधिक व आतंकीय प्रवृत्तियां बढ रही हैं। भ्रष्टाचार का विशाल रूप हमारे सामने है। किंकर्तव्यमूढता दिन प्रतिदिन बढ रही है। ऐसी परिस्थिति में पुलिस विभाग में रहकर निष्कलंक, चरित्रवान् और समाज के चाहनेवाले पुलिस अधिकारी अत्यंत कम रहे गये हैं। सारे अच्छे गुण बापुसाहबजी में थे। क्यों न होंगें, क्योंकि वे वैदिक विचारों व आर्य समाज तथा दयानन्द के सच्चे अनुयायी जो थे।

पू. बापुसाहबजी का जन्म तत्कालीन बीदर जिले (आज के लातूर जिले) के निलंगा तहसील (गांव) मे हुआ। उनके भ्राताश्री पू.शेषरावजी वाघमारे (आनन्दमुनिजी) प्रसिद्ध वकील थे और यहाँ के प्रथम विधायक भी थे। दोनों की शिक्षा हैदराबाद में हुई। दोनों भाई स्वतंत्रता सैनिक थे। वहां के निजाम राज्य के विरोध में आर्य समाज ने आन्दोलन छेडा था। इसलिए इन दोनों भाइयों ने उसमें स्वयं को सक्रिय किया। भारत स्वतंत्र हुआ, हैदराबाद संस्थान भी स्वतंत्र हुआ। स्वतंत्रता के उपरान्त बडे भाई ने आर्य समाज का प्रचार और सामाजिक कार्य स्वीकारा और बापुसाहब ने पुलिस में कार्य करने का निश्चय किया। उनके शब्दों में दुष्टों याने कि गुनहगारों व अपराधियों की सेवा करने का निश्चय किया। निर्मल चरित्र, वैदिक विचार, प्रखर बुद्धिमता और पुरूषार्थ से वे आय.पी.एस.अधिकारी बनें। उनके होते हुए दुष्टों को डर सा लगता था। उनकी कार्यपद्धति कुछ अलग सी थी। निष्काम भाव और ईश्वर पर दृढ विश्वास होने से उन्हें अपने पुलिस सेवाकाल में कभी भी अपयश का सामना नहीं करना पडा। निवृत्त होने के बाद उन्होंने मुझे कहा था -'मैं अपने कार्य में कभी भी अयशस्वी नहीं हुआ। जितने भी केसेस आए, उनमें मैंने शोध किये, अपराधियों

www.thearyasamaj.org

को पकडा और उन्हें शिक्षा भी हुई। आज क्या कोई भी पुलिस अधिकारी इतने आत्मविश्वास के साथ ऐसा कह सकता है ? इसका उत्तर अधिकतर ना में ही होगा।.

मानवत जि. परभणी में घटित **सामूहिक हत्याकाण्ड** का केस तो अपने में ही एक नई मिसाल थी। प्रथम दो तीन हत्याएं होने के पश्चात् उन्हें गुनहगारों को पकडना था। वहां पर उस हत्याकाण्ड में राजनीति के किसी वजनदार व्यक्ति (नेता) का हाथ था। उसके अपराध का जो उद्देश्य बताया था, वह किसी आधुनिक विचार के लोगों के दिमाग के बाहर का था। हुआ वही, जो अक्सर होता है। वहां से वाघमारे जी का तबादला किया गया। गुनहगार छुट गये और आगे ११ से भी अधिक हत्याएं होती रही। मुंबई व महाराष्ट्र की सारी पुलिस यन्त्रणा मानवत में रहते हुए भी यह होता रहा। तब अन्त में पता चला कि वाघमारे साहब ही सही थे, वे ही सत्यमार्ग पर थे । व्यर्थ ही हमने शंकायें लेकर उनका तबादला किया। परिणामतः अनेकों की हत्याओं के हम भागी बनें। तब पुलिस अधिकारियों ने उन्हें सम्मान के साथ फिर से बुलाकर यह केस उन्हें सुपूर्द किया। इसमें केस भी चला और अपराधियों को फांसी भी हुई। यह सब श्री बापुसाहबजी के पुरूषार्थ, सच्चाई, लगन और ईमानदारी का फल था। इस उत्कृष्ट कार्यपर उन्हें राष्ट्रपति पदक से सन्मानित किया गया। साथ ही अनेंको पुरस्कार भी प्राप्त हुए। उन्हें सबसे अधिक आनन्द तो तब हुआ, जब उनका चित्र स्कॉटलँन्ड यार्ड के पुलिस मेगेझीन के मुखपृष्ठ पर छापा गया। यह उनके जीवन का अत्युच्च आनन्द का बिन्दू था। आर्य समाज ने भी उनका उचित सम्मान किया।

अन्त में नागपुर (महाराष्ट्र) रेल्वे के **'सुपरिटेन्डींग ऑफ पुलिस'** के पद से वे निवृत्त हो गए निवृत्त होने के पश्चात् पत्रकारों ने उन्हें प्रश्न किया - **'पुलिस प्रशासन को आप क्या संदेश देना चाहते हैं ?'** उन्होंने तब कहा था- **'पुलिस ने बिल्ली की आँख और कुत्ते की नाक की भांति कार्य करना चाहिए।'** शासन ने उन्हें उनका सेवाकाल बढाने के लिए अनुमति दी थी। किन्तु एक आर्यवीर का उत्तर था - **'अब तक मैंने अपराधियों (दुर्जनों) की सेवा की है, अब मुझे सज्जनों की सेवा करनी है।'** और विनम्रतापूर्वक इस मोह से दूर हटे। यह भी निर्मोहिता की एक नई मिसाल बन गई।

पुलिस सेवा से निवृत्ति के उपरान्त उन्होंने जैसे कहा था, उसी प्रकार सज्जनों की ही सेवा की। करीब तीन साल तक वे आर्य समाज का प्रचार करते रहे। उन्होंने प्रण किया था कि 'जिस दिन प्रचार नहीं करूंगा, उस दिन मैं भोजन ग्रहण नहीं करूंगा।' सौभाग्य से जहाँ इच्छा दृढ होती हैं, वहां मार्ग भी सरल होते हैं। इस नियम से निवृति

www.thearyasamaj.org

के बाद उनका एक दिन भी प्रवचन के बिंना नहीं बीता । वे पाठशालाओं , कॉलेजों, युवाओं, बच्चों में बहुत ही प्रिय थे । लॉ कॉलेज व बँकों में भी व्याख्यान देते थे । समाज प्रबोधन के साथ ही वे **'विज्ञान और तत्वज्ञान'**, **'अपराधी और कानून'** आदि विषयों पर भी प्रमुखता से विनोदी शैली में व्याख्यान देते थे। औरंगाबाद के माणिकचंद पहाडे लॉ कॉलेज में तो उन्हें खुला आमन्त्रण था । उनके लिए किसी भी दिन एक घन्टा व्याख्यान की अनुमति प्राचार्य महोदय ने दे रखी थी । उनके व्याख्यान विषय रहते थे- **'अपराध शोध पद्धति, कानून, विज्ञान, मनोविज्ञान और तत्वज्ञान आदि ।'**

वाघमारे काका एकनिष्ठ आर्य समाजी थे । उनके रोम रोम में वैदिक विचार समाये हुए थे। अध्यात्म , व्यवहार, राजनीति, समाजकार्य तथा आप्त हो या अन्य दूसरे लोग , उनका पूरा विश्वास आचरण पर रहता था । शुद्धाचरण पर उनकी कडी नजर थी । बच्चों को भी गुस्सा करते समय वे कहते थे - 'उन्हें (बच्चों को) कभी भी मूर्ख मत कहो, किन्तु आप कितने बुद्धिमान हो' ऐसा ही कहो ।' व्यंग्यात्मक सुधार करना, यह उनकी विशेषता थी। नियम पालन करने में भी उनका कटाक्ष रहता था। कभी-कभी वे पुणे में भी थे।

एक बार हम लोग उनकी गाडी में बैठकर कहीं जां रहे थे। सिग्नल पर गाडी को रोकना पडा, किन्तु गाडी कुछ १ फीट आगे जाकर सफेद पट्टी पर चढी होगी, तब वे एकदम से ड्राईवर पर गरज उठे **'गाडी पीछे लो, हम ही यदि कानून तोडेंगें, तो अन्य लोग क्या कहेंगे ?** आगे चलकर थोडी देर के लिए गाडी रूकी और काकाजी अन्यत्र कहीं चले गए । तब मैंने पूछा- 'काकाजी कहाँ गए ?' जवाब मिला -'यहाँ एक व्यक्ति रहता है, उसके पास गए हैं ।' थोडी देर के बाद मैने वहाँ पर जाने का निश्चय किया और देखा तो एक ही कमरे में रहनेवाले एक सामान्य सिपाही के घर में हमारे डीएसपी साहब भोजन पा रहे थे और वह व्यक्ति ऐसे अतिथि से मिलकर धन्य हो रहा था। उंच-नीच का भेद उनके आचरण में हमे कभी भी दृष्टिगोचर नहीं हुआ। एक सिपाही के घर में हंसते - खेलते भोजन करनेवाले अतिथि (वस्तुतः अतिथि- पूर्व सूचना के सिवाय) हमारे डी.एस.पी. साहब कदाचित एकमेव ही होंगें।

उनका गृहस्थ जीवन भी अति साधारण रहा, किन्तु इस प्रसंग से **'अतिथि देवो भव ।'** का सभी को अनुभव आया । उनकी ५ पुत्रियाँ हुई। बेटा नहीं, किंतु कभी भी उन्हें इसका दुःख नहीं हुआ । इसके विपरीत वे नित्य हंसमुख और विनोदी स्वभाव के साथ कहते थे - **हंसो और मेरे समान मोटे हो जाओ**। दुःखों को फूलों के समान

www.thearyasamaj.org

स्वीकार करनेवाले वे सर्वसुखी इन्सान थे। वे कहते थे - **इस संसार में कौन सर्वथा सुखी है ?** उत्तर में कहते थे - **मैं हूं** । उन्होंने अपना मकान कहीं भी नहीं बनवाया। इस्टेट बनाई नहीं। लोकसंग्रह, शुभकर्म और विद्यादान इसी को वे अपनी इस्टेट कहते रहे। सन् १९८० में औरंगाबाद रहते समय एक बार हम लोग किसी कार्यक्रम में चर्चा कर रहे थे। एक बहुत बडे जमीनदार थे और वे अनेकों प्रमुख व्यक्तियों को प्लॉट बनाकर बेचने थे। नाम था हिरालाल मन्नालालजी ! वे उसी समय वाघमारे काका के पास आए और उन्हें घर के लिए अपना प्लॉट देना चाहा। तब काकाजी ने कहा - **'ईश्वर की इस विशाल सृष्टि में मुझे केवल साडेतीन हाथ की जमीन चाहिए, वह भी अन्त में और वह तो मुझे कहीं भी मिल जाएगी ।'** जीवन के अन्त पर्यन्त उन्होंने अपना घर नहीं बनाया। उनका पैतृक घर निलंगा में ही था। परिग्रह से वे सदा अलिप्त ही रहे। सेवानिवृत्ति के उपरान्त वे अल्पकाल ही रहे। दो बार हृदयाघात की सम्भावना हुई। डॉक्टर कहते थे -अब आराम करो, किन्तु वे कभी एक घन्टा भी स्वस्थ नहीं बैठे। अविरत कार्यरत थे। कहते थे -**मुझे घर में बिठाकर आप मेरा मृत्यु टाल सकते हो क्या ?** दि. २१ मई १९८५ को उनका अल्प सी बिमारी के कारण मुंबई में निधन हुआ। **आश्चर्य की बात** कि उनकी डायरी में दि. २२ मई १९८५ के पृष्ठपर उन्होंने केवल एक **प्रश्नचिन्ह लगाकर रखा था** । इसमे पता चलता है कि उन्हें अपनी मृत्यु के बारे में पूर्वज्ञान हो चुका था। अपने प्रवचन के अन्त में वे कहते थे - **'संसार का निरोप लेते समय किसी का भी आरोप न लगा रहे, ऐसी स्थिति में इस जीवन का समारोप हो, यहीं परमेश्वर से प्रार्थना !'** हंसते - हंसते और अन्यों को हंसाते हुए अपने जीवन का उन्होंने समारोप किया। मुझे औरे मेरे पतिदेव को उनका सान्निध्य की प्राप्त हुआ और हम जीवन में धन्य हो गए। आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के श्रावणी वेदप्रचार (मानव जीवनकल्याण वेदज्ञान प्रचार अभियान) के पावन अवसर पर हम सभी के प्रेरणास्त्रोत तथा आर्य समाज के महान् वेदप्रचारक पू. बापुसाहबजी वाघमारे (काका) को शतशः प्रणाम ! इस लेख का समापन करते हुए मराठी की कुछ पंक्तियां लिखने का मोह नहीं संवारा जाता-

परक्यानांही आपलेसे करतील,
असे गोड शब्द असतात
शब्दानांही कोडं पडावं,
अशी कांही गोड माणसं असतात
किती मोठं भाग्य असतं,
जेंव्हा ती आपली असतात...!

-रो हाऊस नं. ३,साई अव्हेन्यु,
पिंपळे सौदागर, पुणे १७
मो. ०९८२२७२८५१६,

www.thearyasamaj.org

गुरुकुल परली में 'याज्ञवल्क्य यज्ञशाला' का शिलान्यास

प्रान्तीय सभान्तर्गत आर्य समाज परली-वैजनाथ द्वारा संचालित स्वामी श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम में विशाल रूप में बनायी जानेवाली महर्षि याज्ञवल्क्य यज्ञशाला का शिलान्यास हाल ही में सम्पन्न हुआ।

पुणे स्थित आर्य समाज के वारजे मालवाडी के प्रधान तथा दानशूर आर्य उद्योगपति श्री लखमसीभाई वेलानी जी के शुभकरकमलों से वैदिक मंगल मन्त्रोच्चारण - पूर्वक इस यज्ञशाला की आधारशिला रखी गयी। सभा के उपप्रधान तथा आर्य समाज सम्भाजीनगर के मंत्री दयारामजी बसैये तथा उनकी सहधर्मधारिणी सौ. प्रभावतीदेवी बसैये, कन्या सौ. प्रज्ञा विजय परदेशी (पुर्रे), आर्य समाज परली प्रधान श्री रामपालजी लोहिया, मंत्री उग्रसेनजी राठौर, डॉ. ब्रह्ममुनिजी, विज्ञानमुनिजी, सोममुनिजी, अमृतमुनिजी आदि इस अवसर पर उपस्थित थे। लगभग १५ लाख रूपयों की लागत से पूरे मार्बल पत्थर से बननेवाली इस भव्य अष्टकोनी यज्ञशाला का निर्माण ३० फीट की परिधि में होगा, जिसमें लगभग २०० लोग बैठ सकेंगे। इस यज्ञशाला के निर्माण में सर्वाधिक सहयोग श्री वेलानीजी एवं बसैये बन्धु का रहेगा।

पं. विश्वनाथ शास्त्री 'सेवा पुरस्कार' से सम्मानित

समाज के सभी घटकों को सुसंस्कारित करने तथा उन्हें वैदिक विचारों व यज्ञादि पवित्र कार्यो की सत्प्रेरणा देकर उनका सुयोग्य पथप्रदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाले पिंपरी पुणे के यशस्वी पुरोहित विद्वान पं. विश्वनाथजी शास्त्री को हाल में **समाजसेवा पुरस्कार** से सम्मानित किया गया है।

पुणे शहर के उबावडा सोशल ग्रुप की ओर से उन्हें यह पुरस्कार विशेष समारोह में सम्मानपूर्वक प्रदान किया। हरियाणा के हिसार स्थित दयानन्द ब्राह्म उपदेशक महाविद्यालय के यशस्वी स्नातक रहे पं. श्री शास्त्रीजी गत २५ वर्षों से बडी निष्ठा व लगन के साथ पौरोहित्य कार्यों व वैदिक धर्म की सेवा में सलग्न हैं। आर्य समाज पिंपरी की सभी गतिविधियों को संचालित करने तथा यज्ञादि साप्ताहिक सत्संग, विशेष पर्व, समारोहों को सफल कराने में पंडितजी का योगदान रहता है। पुणे नगर में जगह-जगह पर यज्ञों के माध्यम से वैदिक धर्म का प्रसार बडी कर्मठता के साथ करते है। उनके इस सामाजिक योगदान को देखकर उबावडा सोशल ग्रुप ने **समाजसेवा पुरस्कार** के लिए उनका चयन कर विशेष समारोह में उन्हें यह पुरस्कार प्रदान किया गया। इस उपलक्ष्य में पंडितजी का आर्य जगत् व प्रान्तीय सभा द्वारा हार्दिक अभिनन्दन!

www.thearyasamaj.org

सम्भाजीनगर में वृष्टियज्ञ से जमकर वर्षा

आर्य समाज, सम्भाजीनगर के तत्त्वावधान में दि. १५ से २१ जून के दौरान **'जनकल्याण पर्जन्यवृष्टि महायज्ञ '** सम्पन्न हुआ, जिसके अन्तिम दिन पूर्णाहुति के बाद सायंकाल शहर व परिसर में जमकर बादल बरसे । सर्वत्र जोरदार वर्षा होने से नागरिकों व किसानों में खुशी की लहर छा गयी और मन ही मन पर्जन्यवृष्टि यज्ञ के आयोजकों को बधाई देते रहें । यज्ञ के आयोजनकर्त्ता आर्य समाज सम्भाजीनगर के पदाधिकारी अपने प्रयत्नों की सफलता पर जहां सन्तुष्ट दिखाई दिये, वहीं वैदिक वृष्टियज्ञ प्रक्रिया के प्रति लोगों में श्रद्धा व विश्वास बढता नजर आया । शहर के कैलाशनगर स्थित पू. ज्वालाप्रसाद महाराज डेरा मठ में आयोजित इस वृष्टियज्ञ के ब्रह्मापद को प्रसिद्ध वैदिक वृष्टिविशेषज्ञ डॉ.कमलनारायणजी आचार्य ने सुशोभित किया तथा पौराहित्य वैदिक धर्मप्रचारक पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य ने किया ।इस यज्ञ में श्रद्धानन्द गुरूकुल आश्रम के ब्रह्मचारियों ने वेदपाठ किया ।इस यज्ञ में बडी मात्रा में विभिन्न औषधि वनस्पतियां, सुगन्धित सामग्री, गौघृत आदि द्रव्यों का बडे पैमाने पर प्रयोग किया गया । यज्ञ के उपरान्त आचार्य डॉ.कमलनारायणजी के आध्यात्मिक प्रवचन व पं. सुरेन्द्रपालजी आर्य के मधुर भजन भी होते रहे । इस महायज्ञ का शुभारंभ सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान डॉ. ब्रह्ममुनिजी के करकमलों द्वारा ओ३म् ध्वजा फहराकर हुआ। इस अवसरपर डॉ. चंपालाल देसरडा, पू. श्यामलगिरि महाराज आदि उपस्थित थे । सप्ताहभर चले इस वृष्टि यज्ञ में लगभग २११ यजमान दम्पतियों ने सश्रद्ध आहुतियां प्रदान की, इनमें प्रतिष्ठित श्रद्धालुओं का समावेश था । दि. २ जून को भाजपा के प्रदेश अध्यक्ष श्री देवेन्द्रजी फडणवीस ने यज्ञस्थली को भेंट देकर आहुतियां दी ।

उडीसा में चरित्र निर्माण शिविर सम्पन्न

उत्कल आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्ष गुरूकुल आमसेना (उडीसा) की ओर से युवकों के चरित्र निर्माण व सर्वांगिण विकास के उद्देश्य से उडीसा के पांच स्थानों पर भिन्न-भिन्न तिथियों में **आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर** सोत्साह सम्पन्न हुए । पू. स्वामी धर्मानन्दजी सरस्वती के मार्गदर्शन में तथा आचार्य स्वामी व्रतानन्दजी के निर्देशन में पं. आचार्य शरच्चंद्र शास्त्री, आचार्य सुभाषचंद्रजी विशिकेशनजी शास्त्री, ब्र. श्रद्धानंद तथा अन्य कार्यकर्त्ताओं के कुशल संयोजन में उपरोक्त शिविर ३ अप्रैल से ६ जून के दौरान उडीसा व झारखंड में सम्पन्न हुए ।

www.thearyasamaj.org

चुनाव समाचार

आर्य समाज, नांदेड

आर्य समाज नान्देड का त्रैवार्षिक निर्वाचन आर्य कार्यकर्त्ता श्री यादवराव भांगे की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। प्रा. श्री विनायकराव तान्दले ने निर्वाचन अधिकारी के रूप में कार्य किया। इस निर्वाचन बैठक में निम्न पदाधिकारियों का चयन किया है। **प्रधान-** प्रा.डॉ.शारदादेवी तुंगार, **उपप्रधान-** जी.व्ही. मारमपल्ले श्री गणपतराव कदम, **मन्त्री-पं.** नारायणराव कुलकर्णी, **उपमन्त्री-** श्री सत्येन्द्र चिंचोलीकर, प्रशांत कोकणे **कोषाध्यक्ष-**प्रा.विनायकराव तान्दले, **उपकोषाध्यक्ष-** श्री विनय कंधारकर **पुस्तकाध्यक्ष-**श्री दिलीप वैद्य, **उपपुस्तकाध्यक्ष-**श्री ओमकुमार कुरूडे **आर्यवीरदलाधिष्ठाता-**प्रा.डॉ.जातवेद पवार, **यज्ञ समिति-**श्री संभाजी किरकने, एड्. ओकारेश्वरी आर्य, सौ.लता चिंचोलीकर, **सभा प्रतिनिधि-**प्राचार्य देवदत्त तुंगार, यादव भांगे, सत्यव्रत जिंदम **अंतरंग सदस्य-**सर्वश्री प्रा. राजवीर कु. शास्त्री, सुभाषचंद्र जोशी,ओमप्रकाश गडम,योगेश नवले, देवराव सोलंके, धोंडिबा सुरावार, **परामर्शदाता-** ,मधुकरराव पाटील (खतगावकर),डॉ. हंसराज वैद्य, डॉ. राजपाल पाटील,डॉ. कर्मवीर

आर्य समाज, गुंजोटी के जीर्णोध्दार हेतु -

-आर्थिक सहयोग की अपील-

समाज व राष्ट्र के नवनिर्माण के अभिलाषी उदारमना महानुभाओं, दानशूर सज्जनों तथा सभी आर्य कार्यकर्त्ताओं से नम्र निवेदन है कि एक समय क्रान्तिकारी घटनाओं का केन्द्र रहे **आर्य समाज गुंजोटी ता.उमरगा, जि.धाराशिव** (उस्मानाबाद,-महाराष्ट्र) इस ऐतिहासिक भवन में सत्संग, संस्कार आदि सभी गतिविधियां बन्द है, क्योंकि जीर्णता के कारण यह भवन कब गिर जायेगा ? यह कह नहीं सकते। हैदराबाद स्वतन्त्रता संग्राम के समय का यह वह क्रान्तिकारी आर्य समाज है, जहां से अनेकों कर्मवीरों, विद्वानों व क्रान्तिकारियों को सत्प्रेरणा मिलती रही है। निजाम के अनुयायी रजाकारों के अत्याचारों का कडा प्रतिकार गुंजोटी के आर्यो ने बडी शूरता से किया। सन् १९३८ के समय **आर्यवीर पं. वेदप्रकाश** के पावन बलिदान को इस क्षेत्र की पहली क्रान्तिकारी घटना माना जाता है। ऐसी प्रेरणास्थली स्वरूप आर्य समाज, गुंजोटी के भवन का नवनिर्माण कार्य हाल ही में आरम्भ हो चुका है। इस कार्य में आप सभी के आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है। अतः उदार अन्तःकरण से दान देकर पुण्य के भागी बनें और आर्य बलिदानियों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें।

निवेदक-प्रान्तीय सभांतर्गत 'आर्य समाज, गुंजोटी जीर्णोद्धार समिति'

शोक समाचार

आचार्य डॉ. विजयपालजी नहीं रहे।

आर्य जगत् को विशेषकर पाणिनीय व्याकरण परम्परा के निर्वाहक विद्वानों, अध्यापकों को यह जानकर अतीव दुःख होगा कि आर्षपाठविधि के सम्पोषक, वेद, वेदाङ्ग, उपाङ्गों के प्रकाण्ड विद्वान आचार्य डॉ. विजयपालजी अब हममें नही रहें। बुधवार दि. ७ अगस्त २०१३ की पावन प्रातःवेला में ५.४५ बजे अपना भौतिक चोला त्यागकर वे ईश्वरीय परमानन्द में लीन हो गये। सोनीपत (हरियाणा) जिले के रेवली (शाहपुर तुर्क) स्थित पाणिनि गुरूकुल महाविद्यालय के प्रांगण में आचार्यजी ने अन्तिम सांस ली। गत कई वर्षों से वे अस्वस्थ चल रहे थे, किन्तु पिछले सवा वर्ष से पक्षाघात के कारण उनका स्वास्थ्य अधिकही बिगड गया था। उनकी आयु ८४ वर्ष की थी।

पाणिनीय अष्टाध्याची महाभाष्य व्याकरणशास्त्र, निरूक्त, छन्द, कल्प, मीमांसा एवं, षडदर्शनादि आर्ष विद्या के प्रचार व प्रसार में अपना सम्पूर्ण जीवन लगानेवाले आचार्यजी श्री पं. ब्रह्मदत्त जिज्ञासुजी के सुयोग्य शिष्य एवं पं. युधिष्ठिरजी मीमांसक के अनन्य सहयोगी, सन्मित्र रहे हैं। गुरूदेवजी के निधन के पश्चात् पं. युधिष्ठिर जी एवं डॉ. विजयपालजी इन दोनों ने मिलकर पाणिनि महाविद्यालय बहालगढ में व्याकरण महाभाष्यादि आर्ष शिक्षा के अध्ययन-अध्यापन की परम्परा जारी रखी। १९९४ में मीमासकजी के देहावसान के पश्चात् महाविद्यालय के अध्यापन, संशोधन, सम्पादन आदि कार्यभार आचार्य श्री विजयपालजी ही संभाल रहे थे। सन् २००० से यह महाविद्यालय बहालगढ से रेवली (सोनीपत) में स्थानान्तरित हो गया। किसी भी प्रकार की उपाधि या प्रमाणपत्र (डिग्री) के बिना केवल विशेष योग्यता वाले वेद, व्याकरण, दर्शन के विद्वान तैयार करने का कार्य आचार्यजी के निर्देशन में सुचारू रूप से चलता रहा। देश के अनेकों विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों एवं अन्य शिक्षा संस्थाओं में उनके सुयोग्य शिष्य अपनी अपूर्व विद्वत्ता के माध्यम से वेद, संस्कृत व व्याकरण का अध्यायन-अध्यापन का पुनीत कार्य करते दिखाई दे रहे हैं।

ऐसे तपस्वी विद्वान के चले जाने से आर्य जगत् व संस्कृत विद्वत् समाज में शोक की लहर छा गयी है। उनके पार्थिव शरीर पर दूसरे दिन प्रातः १० बजे सोनीपत (हरि.) में अन्तिम संस्कार किये गये। इस अवसर पर-विभिन्न गुरूकुलों के आचार्य, विद्वान तथा शिष्यवृन्द बडी संख्या में उपस्थित थे।

विगत ४० वर्षों से अध्ययन व अध्यापन के साथ ही अनेकों प्राचीन वैदिक ग्रन्थों का सम्पादन व व्याख्यान करके वैदिक ज्ञान सरिता को प्रवाहित करने में आपने

www.thearyasamaj.org

सराहनीय भूमिका निभाई है। आचार्यजी द्वारा वैदिक सारस्वत महायज्ञ में दिये गये महान् योगदान को देखते हुए भारत सरकार की ओर से उन्हें 'राष्ट्रपति सम्मान' प्रदान कर सम्मानित किया गया है। साथ ही हरियाणा संस्कृत अकादमी की ओर से रू. १ लाख के वाल्मीकि पुरस्कार से भी गौरवान्वित किया गया है।

आचार्य डॉ. रामनाथजी वेदालंकार का देहावसान

वेदों के प्रकाण्ड पण्डित, उच्चतम वैदिक विद्वान, लेखक तथा गुरूकुल कांगडी विश्वविद्यालय, हरिद्वार पूर्व आचार्य डॉ.श्री रामनाथजी वेदालंकार का गत ८ अप्रैल २०१३ को दोपहर २ बजे वृद्धावस्था के कारण निधन हुआ। **जीवेम शरदः शतम्** इस वैदिक मन्त्राशयानुसार आचार्यजी ने लगभग सौ वर्ष की दीर्घायु पायी।

गुरूकुल कांगडी के १९३६ के सुयोग्य स्नातक रहे आचार्य डॉ.श्री रामनाथजी ने विगत ४० वर्षों तक गुरूकुल वि.वि. के विभिन्न पदों पर रहकर इस संस्थान को अपनी सेवाएं दी। वेदों के मर्मज्ञ विद्वान व संस्कृत के उद्‌भट विद्वान् रहे आचार्यजी ने सामवेद का सम्पूर्ण भाष्य किया है। साथ ही वेदों की वर्णन शैलियां, वैदिक मधुवृष्टि, वैदिक वीर गर्जना, वैदिक नारी, वैदिक शब्दार्थ विचार, ऋग्वेद ज्योति, वेदमंजरी, आर्ष ज्योति, वैदिक सूक्तियां आदि ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। विभिन्न स्थानों पर आयोजित सभा, सम्मेलनों व उत्सवों पर भी आपके ओजस्वी वैदिक विचारों का लाभ प्रबुद्ध श्रोताओं को हुआ। भारत सरकार की ओर से आपको **'राष्ट्रपति सम्मान'** से भी गौरवान्वित किया गया है।

उपरोक्त दोनों दिवंगत आर्य विद्वद्विभूतियों को महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा व वैदिक गर्जना द्वारा भावभीनी श्रद्‌धाजंलि !

श्रद्‌धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली

-लाभकारी औषधियां व यज्ञसामग्री उपलब्ध-

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्‌धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं। विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। अतः सभी से निवेदन है कि इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें। साथ ही हवन के लिए विभिन्न जडी बुटियों से संमिश्रित **'यज्ञ सौरभ'** यह सुगन्धित सामग्री भी बनाई गयी है। इसे आर्य समाजें अधिक मात्रा में खरीदें

संपर्क- वैद्य विलास बनसोडे (फार्मेसी प्रमुख) मो. ९०११६०४६११

www.thearyasamaj.org

॥ ओ३म् ॥

माझ्या मराठीचा बोलु कवतिके। परि अमृतातेही पैजेसीं जींके ।
ऐसी अक्षरेंचि रसिकें । मेळवीन ॥ (संत ज्ञानेश्वर)

मराठी विभाग

उपनिषद सन्देश परमेश्वराचे सर्वश्रेष्ठ नाव 'ओ३म्'

सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति तपाँसि सर्वाणि च यद्वदन्ति ।
यदिच्छन्तो ब्रह्मचर्यं चरन्ति तत्ते पदं संग्रहेण ब्रवीम्योमित्येतत्॥

(कठोपनिषद-२/१५)

चारही वेद जा ब्रह्मवाचक शब्दला पुन्हा पुन्हा स्मरण करतात, यम-नियम इत्यादी सर्व प्रकारचे तप हे देखील ज्यांचे गुणगान करतात, ज्याची-ज्याची इच्छा करीत ब्रह्मचर्य व्रतांचे आचरण केले जाते, ते तुझे पद संक्षेपाने मी सांगू इच्छीतो की ते ओ३म् हेच आहे. म्हणजेच परमश्वराचे सर्वश्रेष्ठ नाव **ओ३म्** होय.

दयानंदांची अमृतवाणी धर्मो जयति नाधर्मो !

परमेश्वराच्या या सृष्टीमध्ये अहंकारी, अन्यायी, अविद्वान लोकांचे राज्य फार काळ टिकत नसते. जगाची ही स्वाभाविक प्रवृत्ती आहे की, जेव्हा एखाद्या लोकसमूहात किंवा देशात लोकांच्या गरजेपेक्षा जास्त धन जमा होते, तेव्हा आळस, पुरूषार्थहीनता, ईर्ष्या, द्वेष विषयासक्ती आणि प्रमाद वाढीलागतात. त्यामुळे देशात विद्या व सुशिक्षण ही नष्ट होऊन मद्यमांस-सेवन, बाल्यावस्थेत विवाह, स्वैराचार वगैरे सारखे दुर्गुण व व्यसने वाढतात. तसेच जेव्हा युद्धविभाग, युद्धविद्याकौशल्य आणि सैन्य इतके प्रचंड वाढते की, त्याच्यासमोर जगातील कोणताही देश टिकाव धरू शकत नाही, तेव्हा त्या सामर्थ्यशाली देशाच्या लोकांमध्ये पक्षपात, अहंकार यामुळे अन्याय, अत्याचार या गोष्टी वाढतात. हे दोष प्रमाणाबाहेर वाढले की, त्यांच्यात यादवी सुरू होऊन त्यांचा नाश होतो किंवा त्यांच्या बाहेरच्या एखाद्या लहानशा गटातून एक अत्यंत समर्थ पुरूष उदयाला येतो आणि तो त्यांचा पराभव करतो. उदाहरणार्थ, मुसलमान बादशहांच्या सत्तेविरूद्ध शिवाजी व गुरू गोविंदसिंह दंड ठोकून उभे राहिले आणि त्यांनी मुसलमानी सत्ता धुळीला मिळविली.

(सत्यार्थ प्रकाश-अकरावा समुल्लास)

www.thearyasamaj.org

आदि वेदमाऊली, देई सर्वभूतां सावली

(वेदमंत्रांचा प्राकृत मराठी ओवीबद्ध अनुवाद)

पद्यानुवादक-संभाजी पवार (घटांग्रेकर)

(ऋग्वेद प्रथम मंडल, द्वितीय सूक्त, मंत्रसंख्या ९, ओवीसंख्या १८)

वायवा याहि दर्शते मे सोमा अरंकृताः। तेषां पाहि श्रुधी हवम् ॥१॥

हे ज्ञान चक्षुदृष्टा । अनंत बलयुक्त प्राणसृष्टा ।
अंतर्यामी हृदयप्रविष्टा । प्रकाशित व्हावे हृदयी ॥१॥
आहा आपण कैसे चमत्कृत । प्रत्यक्ष वैश्विक पदार्थ केले सुशोभित ।
रक्षक बनुनी करावे सुरक्षित । ही स्तुति ऐकावी आमुची ॥२॥
स्पृशादिगुणे अनुभव दृष्टा । भौतिक वायु प्राणी जीवन सृष्टा ।
सर्व प्राप्त पदार्थ सुशोभित दृष्टा । बोलती व ऐकती प्राणी सर्व ॥३॥

वायु उक्थेभिर्जरन्ते त्वमच्छा जरितारः । सुतसोमा अहर्विदः ॥२॥

हे अनंत बलवान श्रेष्ठी । प्रत्यक्ष विज्ञान प्रकाश प्राप्तीसाठी ।
औषधी पदार्थ रस उत्पत्तीसाठी । विद्वान स्त्रोत्रे करती स्तुती ॥४॥

वायोतव प्रपृंचती धेना जिगाति दाशुषे । उरूची सोमपीतये ॥३॥

हे विदविद्या प्रकाशकर्ता । सर्वविद्या-विज्ञान प्रकाशदाता ।
नाना विद्या प्रयोजनप्रदाता । चतुर्वेद वाणी देसी ॥५॥
जे वैश्विक पदार्थ चिंतीती । निष्कपट प्रेमयुक्त विद्या देती ।
जे विद्वान पुरूषार्थ करती । त्यासच प्राप्त होत असे ॥६॥
भौतिक वायु योगधारी । शब्दोच्चारण श्रवणकारी ।
नाना पदार्थ ज्ञान धारी । असे ही वाणी बापारे ॥७॥
जे वैश्विक पदार्थ रसपान करती । व शब्दोच्चारण श्रवण करती ।
जे विद्वान निरंतर परिश्रम घेती । प्राप्ती त्यास या वेदवाणीची ॥८॥

इंद्रवायू इमे सुता उप प्रयोभिरा गतम् । इन्द वो वामुशन्ति हि ॥४॥

जे प्रत्यक्ष जलक्रियामय यज्ञ प्राप्त भोग असती । ते सूर्य व वायुयोगे प्रकाशित होती ।
सौरमंडळी पृथ्व्यादि लोका आकर्षिती ।राही भ्रमण गती सुसंगत्वे ॥९॥
जलक्रियामययज्ञ प्राप्त भोगे ।सूर्य व वायु संयोगे ।
अन्नादि पदार्थ योगे । सुख प्राप्ती सर्व प्राण्यासी ॥१० ॥

www.thearyasamaj.org

वायर्विंद्रश्च चेतथः सुतानां वाजिनीवसू । तावा यातमुप द्रवत् ॥५॥

हा ज्ञान स्वरूप धारी । सूर्य वायूसी धारण करी ।
स्वकार्यी समर्थकरी । तया इंद्र वायुसी ॥११॥

वायर्विंद्रश्च सुन्वत आ यातुमुप निष्कृतम् । मक्ष्वि त्था धिया नरा ॥६॥

हा अंतर्यामी ईश्वर वसे । सर्व वैश्विक पदार्थ प्राप्त करवीतसे ।
अंतरिक्षी राहाती सूर्य पवन जैसे । तैसे शरिरी राहाती जीव-प्राण ॥१२॥

मित्रं हुवे पूतदक्षं वरूणं च रिशादसम् । धियं घृताची साधन्ता ॥७॥

जैसे जलसमुद्रादि स्थळी । सूर्याकर्षणे वायुद्वारे मेघमंडळी ।
वर्षाद्वारे सर्वां सांभाळी । वृद्धी होई सर्व जीवांची ॥१३॥
तैसेचि प्राण-अपानाद्वारे । रक्षित वर्धित होती शरीरे ।
लुप्तोपम व्यवहारविज्ञा सिद्धीद्वारे । विश्व उपकार करावा ॥१४॥

ऋतेन मित्रावरूणावृता वृधांवृतास्पृशा । क्रतुं बृहन्तमाशाथे ॥८॥

परमेश्वर आश्रित प्राप्त बळ । येणे सूर्य-वायू होती प्रबळ ।
प्रगट-अप्रगट व्यापून विश्वमंडळ । वृद्धी-विनाश कार्य सिद्ध होई ॥१५॥

कवीनो मित्रावरूणा तुविजाता उरूक्षया । दक्षं दधाते अपसम् ॥९॥

जे ब्रह्मांडी बलकर्म निमित्त असती । ते मित्र-वरूण क्रिया व विद्या पुष्ट करिती ।
आम्हा कर्मबळे धारण करती । व सहाय करती सुख-दुःखासी ॥१६॥
एवं प्रथम सूक्ती अग्नि पदार्थ कथन । द्वितीय सूक्ती सहायक इंद्र वायु मित्र वरूण ।
या चारींचे केले प्रतिपादन ।प्रथम व द्वितीय सूक्तार्थ संगती ही ॥१७॥
स्वामी दयानंद रचित वेद भाष्यसार । हाचि जाणा सत्यार्थ खरोखर ।
सायनाचार्य विसनादि भाष्यकार । विपरीतार्थी त्यजावे ॥ १८॥

श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी, परली

-लाभकारी औषधियां व यज्ञसामग्री उपलब्ध-

आर्य समाज परली द्वारा संचालित श्रद्धानन्द गुरूकुल फार्मेसी में सम्प्रति नई-नई आयुर्वेदिक औषधियां बनाई गयी हैं। विभिन्न वनस्पतियों तथा मौल्यवान पदार्थो के सम्मिश्रण योग से बनी ये औषधियां शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी हैं। अतः सभी से निवेदन है कि इन बहुगुणी औषधियों को खरीदकर स्वास्थ्य लाभ उठावें। साथ ही हवन के लिए विभिन्न जडी बुटियों से संमिश्रित 'यज्ञ सौरभ' यह सुगन्धित सामग्री भी बनाई गयी है। इसे आर्य समाजें अधिक मात्रा में खरीदें

संपर्क- वैद्य विलास बनसोडे (फार्मेसी प्रमुख) मो. ९०११६०४६११

www.thearyasamaj.org

सत्यं वद । धर्मं चर ।

श्रावणी पर्व...शिकवी स्वाध्यायधर्म

-पं. राजवीर शास्त्री

वैदिक संस्कृतीत **श्रावण महिना** हा सर्व सणांचा राजा मानला जातो. या महिन्यात श्रावणी उपाकर्म, राखी पौर्णिमा, नागपंचमी, श्रीकृष्ण जन्माष्टमी, पोळा तसेच बौद्धांचा वर्षावास व जैनांचे पर्युषणपर्व अशा लहान - मोठ्या सणांची झुंबड असते. उपाकर्म पर्व हा तर वैदिक धर्मियांसाठी अधिकच महत्वाचा आहे. गृह्यसूत्रांनुसार या सणाचा संबंध वेदस्वाध्यायाशी आहे. उपाकर्म म्हणजे उद्घाटन किंवा शुभारंभ ! यजुर्वेदी लोकांनी श्रवणयुक्त पौर्णिमिदिवशी, ऋग्वेदी लोकांनी नागपंचमी दिवशी, सामवेदी लोकांनी भाद्रपदातील हस्तनक्षत्राच्या दिवशी नूतन यज्ञोपवीत (जाणवे) धारण करून यज्ञविधिपूर्वक वेद स्वाध्यायाला प्रारंभ करावा, असे विधान आहे. ऋग्वेदी, यजुर्वेदी किंवा ब्राह्मण, क्षत्रिय असे गट - तट न पाळता आर्य समाजाच्या वतीने श्रावणी पौर्णिमेच्या दिवशी सर्वजण मिळून एकत्रित पणे उपाकर्म विधी संपन्न केला जातो. श्रवण नक्षत्र, श्रावण महिना आणि त्यात श्रुतींचा (वेदांचा) स्वाध्याय यात एक सुंदर रंग-संगती आहे. शिवाय पावसाळ्याचा काळ म्हटले की बेडकांची ओरड, ढगांचा कडकडाट हा आलाच ! पुन्हा भर म्हणून त्यात ब्राह्मणांचा वेदपाठ म्हणजे परा, पश्यन्ति, मध्यमा व वैखरी या चार प्रकारच्या वाणींचा जणू कांही संगमच होय ! यामुळेच हा श्रावण महिना उल्हासमय बनतो.

उपाकर्म (उपाकरण) विधी व उपनयन विधी यात बराच फरक आहे. तरीही या उपाकर्माला वार्षिक उपनयन संस्कार म्हणणे योग्य आहे. कारण या दोन्हींचा उद्देश्य मात्र एकच आहे. तो म्हणजे वेदाध्ययन ! शिवाय वैदिक धर्माचे रक्षण वैदिक संस्कृतीचे जतन नव्या पीढीची जडण - घडण तसेच परिवार, समाज व राष्ट्राचे भरणपोषण हे या अनुषंगाने आलेच ! उपाकरण व उपनयन या दोन शब्दांतील उप या उपसर्गाचा अर्थ आहे - **जवळ** ! आणि आकरण व नयन या शब्दांचा अर्थ आहे - **घेऊन जाणे** ! दोन्हींचा अर्थ मिळवला तर **जवळ घेऊन जाणे** असे वाक्य बनते. परंतु यातून पूर्ण बोध होत नाही. प्रश्न असा पडतो की कोणाला कोणाजवळ घेऊन जायचे ? याचे उत्तर आहे- ब्रह्मचाऱ्यांना गुरूकुलात आचार्याजवळ घेऊन जायचे ! गृहस्थी, वानप्रस्थी व संन्यास्यांना वेद स्वाध्याय व सत्संगाकडे घेऊन जाणे. जनसामान्यांना यज्ञ (श्रेष्ठतम) कर्माकडे वळविणे आणि आत्म्याला ईश्वरप्रणिधानाकडे घेऊन जाणे.

स्नातक जेंव्हा विद्याभ्यास पूर्ण करून पितृकुलात जायला निघतात, त्यावेळी

www.thearyasamaj.org
आयोजित समावर्तन संस्कार (निरोप समारंभ) कार्यक्रमात आचार्य आपल्या शिष्यांना - **सत्यं वद, धर्मं चर, स्वाध्यायप्रवचनाभ्यां मा प्रमदः !** असे आवर्जुन बजावतात. कारण आळस व प्रमाद या शत्रुंच्या गोजिरवाण्या रूपावर माणूस सहसा भाळतो आणि तो आपले कर्तव्य कर्म सर्रासपणे विसरतो. ही संभावना ओळखूनच आपल्या ऋषिमुनींनी वेळावेळी अशा पर्वांची (सणांची) योजना करून सावधान करण्याचा प्रयत्न केला आहे. गुरूकुलातील पदवी मिळवली की पुन्हा वेदवाचनाची व ऐकण्याची गरज नाही, असे मानणे अत्यंत भ्रामक आहे. ब्रह्मज्ञान झाले, तरीही श्रवण, मनन व निदिध्यासन ही साधनात्रयी अखंडितपणे चाललीच पाहिजे. म्हणूनच **'स्वाध्याय प्रवचनाचे कामी प्रमाद करू नका'** असे आचार्यांनी बजावले आहे. धर्मशास्त्रांचाही असाच आदेश आहे. संत वचन ही अशीच पुष्टी देते -

सेविलेचि सेवावे अन्न ।
घेतलेचि घ्यावे जीवन ॥
श्रवण आणि मनन ।
केलेचि करावे ॥

कालच्या दिवशी आपण अन्न व पाणी घेतलो होतो. यापुढे त्याची काही गरज नाही, असे आपण म्हणत नाही. अन्न व पाणी दररोज व नियमपूर्वक घ्यावे लागते. अगदी तसेच वेदस्वाध्यायाचे आहे. **अनभ्यासे विषं विद्या ।** असे जे म्हणतात, ते कांही खोटे नाही. स्वाध्यायहीनता हा अक्षम्य अपराध आहे. कारण त्यामुळे परिवार समाज व राष्ट्रातून शील, व्रत व चारित्र्याचा ऱ्हास होतो. या तीन गोष्टी संपुष्टात आल्या, तर जगात जगण्यासारखे शिल्लक राहतेच काय ?

खरोखरच आज आपण सुरक्षित आहोत का ? शरीराने निरोगी आहोत काय काय ? मनाने तणावरहित, भ्रमरहित आहोत काय ? आत्मा आनंदी आहे काय ? खरे तर सध्याची व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक व राष्ट्रीय दुर्दशा संपवायची असेल तर वेदज्ञानाच्या स्वाध्यायाची आवश्यकता आहे. आज श्रद्धेचे प्रदर्शन नव्हे, तर सत्यज्ञानाचे दर्शन व्हायला हवे आहे. आणि हे घडते स्वाध्याय व श्रवणाने ! म्हणूनच संत म्हणतात -

श्रवण आणि मनन,निजध्यासे समाधान
मिथ्या कल्पनेचे भ्रम, उडोनि जाय ।

सद्‌ग्रंथ हेच खरे चिंतामणी होत. त्यांच्या चिंतनाने सर्व चिंता नाहीशा होतात. म्हणूनच संत ज्ञानेश्वर म्हणतात -

सर्व सुख गोडी । सर्वशास्त्र निवडी ।
रीकामा अर्धघडी । राहू नको ।

लोकमान्य बाल गंगाधर टिळक म्हणतात - **मी नरकात सुद्धा चांगल्या पुस्तकांचे स्वागत करीन. कारण ग्रंथांमध्ये नरकालाही स्वर्ग बनविण्याची शक्ती असते.** ग्रंथातील शब्दांमध्ये जीवनाचा अर्क साठलेला असतो. तेंव्हा अंगावर फाटका शर्ट असला तरीही

www.thearyasamaj.org

हरकत नाही, पण सद्ग्रंथ खरेदी करतांना पैशाचा विचार करू नये. **सुशिक्षितांच्या घरी सद्ग्रंथ नसणे म्हणजे सुवासिनींच्या कपाळावर कुंकू नसल्यासारखे आहे,** हे साहित्यिकांचे विचार निश्चितच प्रेरणादायी आहेत. भारतरत्न डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर व अब्राहम लिंकन यांचा इतिहास पाहा. ते वाचनाच्या बळावर आपल्या भोवतालच्या प्रतिकूल परिस्थितीवर मात करून महान झाले, थोरपणाला प्राप्त झाले. स्वाध्यायामुळेच स्वामी श्रद्धानंदजी, स्वामी सर्वानंदजी, पं. रामप्रसाद बिस्मिल यांच्या जीवनाला प्रकाशाची दिशा मिळाली. हुतात्मा भगतसिंह, वीर सावरकर इत्यादी क्रांतिकारकांना स्वाध्यायातून क्रांतीची प्रेरणा मिळाली. मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम आणि योगिराज श्रीकृष्ण यांनी ऋषींच्या आश्रमात राहून वेदाध्ययन केले होते. महर्षी दयानंदांनी एके ठिकाणी लिहिले आहे - **मी माझ्या निश्चय व परीक्षणावरून ऋग्वेदापासून ते पूर्वमीमांसापर्यंत अनुमानतः तीन हजार ग्रंथांना जवळ-जवळ प्रामाणिक मानतो.** यावरून त्यांचे ग्रंथवाचन किती दांडगे होते, याची कल्पना येते. जे जे थोर पुरूष झाले. त्यांच्या थोरवीचे गमक त्यांच्या स्वाध्याशीलतेतच आहे. वेद या शब्दाचा एक अर्थ होतो **लाभ** ! याची सार्थकता पुढील मंत्रावरून पटते.-

स्तुता मया वरदा वेदमाता प्रचोदयन्तां पावमानी द्विजानाम् । आयुः प्राणं प्रजां पशुं कीर्तिं द्रविणं ब्रह्मवर्चसमह्यंदत्त्वा व्रजत ब्रह्मलोकम् ॥

यात असे म्हंटले आहे की उत्तमोत्तम वरदांनाना देणारी वरदा वेदमाता ही ईश्वरप्रदत्त असून तिचे रसास्वादन करणाऱ्यांचे जीवन पवित्र होते व तो द्विजत्वास प्राप्त होतो. वेदानुसार आचरण केल्याने दीर्घायुष्य, प्राणशक्ती, सुसंतती, पशुधन, कीर्ती, संपत्ती व ब्रह्मतेजाची उपलब्धी होते. एवढेच नव्हे तर ब्रह्मलोकही प्राप्त होतो. मुक्तीही मिळते. एकंदरीत वेदस्वाध्यायाने इहलौकिक व पारलौकिक सुखाची प्राप्ती होते.

वेदाध्ययनाचे आभाळभर फायदे आहेत. पण लोक त्याकडे वळत नाहीत. कारण त्यासाठी योग्य ते श्रम घ्यावे लागतात. कठोर तप करावे लागते. कोणीतरी स्वाध्यायाला श्रमाची पराकाष्ठा म्हटले आहे. पाली भाषेत श्रवण शब्दाचा अर्थ श्रम आहे. उचित श्रमाचेच नाव आहे तप ! लोकांना मात्र अचूक प्रयत्न किंवा तप करणे आवडत नाही. महर्षी दयानंदांनी वेदाध्ययनाला परमधर्म म्हटले आहे. परमधर्म म्हणजे परमकर्तव्य ! वेदाध्ययन रूपी श्रमानेच चारही आश्रमाला सार्थकता प्राप्त होते. स्वाध्याय धर्माचे पालन न केल्यामुळे आज चार आश्रमांपैकी दोन आश्रम जवळ-जवळ बंदच पडले आहेत. उर्वरित दोन आश्रमात ही कांही राम उरला नाही. ही स्थिती बदलायची असेल, तर श्रावणी पोर्णिमेदिवशी विधिवत वेदस्वाध्यायाला प्रारंभ करावा व ती श्रृंखला पुढे चार साडेचार महिने तरी नियमित चालू

www.thearyasamaj.org

ठेवावी. चातुर्मास हा वास्तविक पाहता ज्ञानसाधनेचाच कालावधी आहे. हे लक्षात ठेवावे आणि या सणाच्या मूळ उद्देशाशी पाईक राहावे. व्रताची जोपासना ही घरातच करावयास हवी ! ब्रह्मयज्ञ, देवयज्ञ, पितृयज्ञ, अतिथियज्ञ व बलिवैश्वदेवयज्ञ ही पाच महायज्ञे करण्याचे व्रत धारण करावे. सोळा संस्कारांना महत्व देण्यात यावे. सणा-वारांना देखील मूळ वैदिक पद्धतीचे स्वरूप यावे. यामुळे वैदिक धर्माचे व वैदिक संस्कृतीचे रक्षण करणे सुकर होते. कारण धर्म आणि संस्कृतीच्या रक्षणातच आपले रक्षण सामावले आहे. म्हणूनच शास्त्रकाराने म्हटले आहे.-

धर्मो रक्षति रक्षितः ।

आपण अधर्म करायचे आणि इतरांकडून रक्षणाची अपेक्षा करणे चुकीचे आहे. रक्षण हे नेहमी धर्माचे करावयाचे असते. अधर्माचे नव्हे ! तेंव्हा श्रावणी पौर्णिमेला चमकी राखी बांधण्यापेक्षा यज्ञोपवीत (जाणवे) धारण करावे. कारण यज्ञोपवीतामध्ये जो अर्थ दडलेला आहे, तितका अर्थ राखीमध्ये भरलेला दिसून येत नाही. राखी तात्पुरती आहे. यज्ञोपवीतामध्ये सततची जाणिव आहे. असे असले तरी बहीण भावाच्या हाती राखी बांधणारच आहे ! पण यावर्षीपासून बहिनींनी एवढे तरी करावे की भावाकडून तुच्छ वस्तुंची अथवा रूपयांची भेट न घेता हवनकुंड अथवा वेदादी ग्रंथांची मागणी करावी आणि भावाकडून आपल्या रक्षणासोबतच वेद व वैदिक धर्म संस्कृतीच्या रक्षणाची ही मागणी करावी. यातच श्रावणी उपाकर्म पर्वाची सार्थकता आहे.-

राखी का त्यौहार हैं आया
बांध लो बांधकर रक्षाबंधन ।
बदले में मांगती उपहार भैय्या
करो वेदरक्षण, करो धर्म रक्षण ॥

●●●●●●●●

-आर्य समाज, सोलापूर
बलदवा मार्ग, कस्तुरबा मार्केट,
बुधवार पेठ, सोलापुर
मो. ९८२२९९००११

॥ कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

वेदों की ओर लौटो !

वेद प्रतिपादित मानवीय जीवन मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने हेतु

कार्यतत्पर सशक्त एवं समर्थ प्रान्तीय आर्य संगठन

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा

(पंजीयन-एच. ३३३/र.नं.६/टी.इ. (७)१६७/१०४९,
स्थापना ५ मार्च १९७७)

लगभग ३२ मानवकल्याणकारी उपक्रमों का
सफलता के साथ क्रियान्वयन

www.thearyasamaj.org

पुण्यातील प्रवचनांची शृंखला

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

महामती महादेव गोविंद रानडे आणि महादेव मोरेश्वर कुंटे यांच्या आग्रहाला स्वीकारून स्वामीजी दक्षिण भारताची काशी म्हणून ओळखल्या जाणाऱ्या **पुणे** या विद्वानांच्या नगरीत आले. त्यांच्या व्याख्यानांची व्यवस्था अगोदर छावनी परिसरात आणि नंतर भिडे यांच्या वाड्यात करण्यात आली.पौराणिक विचारसरणीचे प्रमुख केंद्र असणाऱ्या या शहरात जेंव्हा स्वामीजींनी विविध विषयांवर तर्कपूर्ण व्याख्याने दिली, तेंव्हा सर्वत्र या क्रांतिकारी संन्याशाचीच चर्चा होऊ लागली. स्वामीजींनी येथे जवळपास पन्नास व्याख्याने दिली असली तरी एका मराठी पत्रिकेने मात्र त्यांच्या पंधराच व्याख्यानांचे सारांशरूपाने लेख प्रसिद्ध केले. हीच १५व्याख्याने पुढे चालून **'पुणे प्रवचन'** किंवा **'उपदेश मंजरी'** (हिंदी) या शीर्षकाने प्रसिद्ध झाली. या व्याख्यानांमध्ये स्वामीजींनी वेदोक्त धर्म, सोळा संस्कार व भारतीय इतिहासांच्या गौरवपूर्ण अध्यायांना श्रोत्यांसमोर ठेवले. दि. ४ ऑगस्ट १८७५ रोजी श्रोत्यांच्या आग्रहस्तव त्यांनी आपल्या जीवनचरित्रावर विस्तृतपणे प्रकाश टाकला.

जेंव्हा ही व्याख्यानमाला संपली, तेंव्हा न्यायमूर्ती रानडे व इतर सज्जन मंडळीनी स्वामीजींच्या सन्मान (गौरव) सोहळ्याचे आयोजन करण्याचा आणि शहरातून एक भव्य मिरवणूक काढण्याचा निश्चय केला. स्वामीजींनी मात्र याला अनिच्छेनेच होकार दिला. असे असतांना ही पुण्यातील तथाकथित पौराणिक मंडळीनी या मिरवणुकीस विरोध करण्याचा निश्चय केला.

www.thearyasamaj.org
परिणामी कांही समाजविघातक शक्तींनी स्वामीजींच्या मिरवणुकीवर दगड-धोंड्यांचा व चिखल-शेणाचा वर्षाव केला. एका गाढवावर झूल टाकून त्यावर गर्दभानंद सरस्वती असे लिहिले. वास्तविक पाहता पौराणिक मंडळींच्या या अनिष्ट कृतींचा थोर स्थितप्रज्ञ विद्वान स्वामी दयानंदांवर थोडाच काय परिणाम होणार होता ? या उलट त्या मूर्खजनांनाच पुण्यातील भद्र पुरूषांच्या आक्रोशाला बळी पडावे लागले. सरकारने ही या गुंडांच्या अनिष्ट प्रयत्नांना निष्फळ करण्यात रूची दाखविली नाही. स्वामीजी हे तर निंदा स्तुती आणि मानापमानांना सारखेच समजत होते. म्हणूनच त्यांनी पुण्यातील या वाईट व अशोभनीय घटनेकडे पूर्णपणे दुर्लक्ष केले.

('दयानंद चित्रावली'चा मराठी अनुवाद)

-३/५, शंकर कॉलनी, श्रीगंगानगर (राज.)

उदगीरच्या 'कन्या संस्कार शिबिरा'स उत्तम प्रतिसाद

प्रांतीय आर्य प्रतिनिधी सभेच्या सहकार्याने उदगीर येथील आर्य समाजातर्फे दि. २६ मे ते २ जून २०१३ दरम्यान **आर्यकन्या वैदिक संस्कार शिबिर** घेण्यात आले. शालेय व महाविद्यालयीन मुलींच्या सर्वांगिण विकास साधण्याच्या उद्देश्याने घेण्यात आलेल्या या शिबिरात जवळपास ३७ मुलींनी सहभाग नोंदविला. शहरातील शेल्हाळ रोडवरील राजर्षी शाहू विद्यालयात आयोजित या संस्कार शिबिरात आसन, प्राणायाम, व्यायाम, काठी संचालन, कराटे आदींच्या माध्यमाने शारीरिक तर विविध धार्मिक, आध्यात्मिक, वेद सैद्धांतिक विषयांवर प्रवचनांच्या माध्यमाने बौद्धिक विकासासाठी यशस्वी प्रयत्न झाले. सकाळी संध्या व हवनानंतर ईश्वर भक्ती व उपासना आदींचे महत्व सांगितले जाई. स. ९.३० ते दु. १२ पर्यंत व नंतर दु. २.३० ते सायं. ४.३० पर्यंत विविध बौद्धिक ज्ञानसत्रांमध्ये मुलींना वैदिक सिद्धांतांची माहिती करून देण्यात येत असे. वैदिक विद्वान सर्वश्री पं. राजवीरजी शास्त्री, (सोलापूर) प्रा.डॉ. नरेंद्रजी शिंदे (उदगीर), पं. चंद्रकांत वेदालंकार (हिंगोली) पं. प्रतापसिंह चौहान, पं. सुभाष गायकवाड, डॉ. प्रकाश कच्छवा आदींनी शिबिरार्थिनींना मार्गदर्शन केले. तर व्यायाम प्रशिक्षक म्हणून श्री मारूतीराव घोरपडे (लातूर) व ब्र.तात्याराव आर्य यांनी जबाबदारी सांभाळली.श्रीमती आशाताई कांबळे यांच्या संयोजकत्वाखाली संपन्न झालेल्या या शिबिराला सफल करण्यासाठी सर्वश्री प्रा. अर्जुनराव सोमवंशी, अजितकुमार सरसंबे, डॉ. बी.एन. मदनसुरे, सतीश मगदाळे, शिवाजीराव मोरे व इतर कार्यकर्त्यांनी मोलाचे सहकार्य केले, तर व्यवस्थापनाचे कार्य सौ. शकुंतला गायकवाड, सौ. ऊर्मिला सोमवंशी ,डॉ.सौ. वर्षा वैद्य, सौ. डॉ. सुजाता मदनसुरे, सौ. मधुमती शिंदे, सौ. सीताबाई निरमनाळे, सौ. सुमनबाई चौहान आदी महिलांनी केले.

www.thearyasamaj.org

लातूरच्या 'पुरोहित शिबिरा'स उदंड प्रतिसाद

महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधी सभेतर्फे लातूर येथील गांधी चौक आर्य समाजात दि. १ ते ७ जुलै दरम्यान आयोजित राज्यस्तरीय **पुरोहित प्रशिक्षण शिबिरास** यावर्षी कार्यकर्त्यांकडून उदंड प्रतिसाद मिळाला. शहरातील गांधी चौक, रामनगर व स्वा.सै.कॉलनी या तीन आर्य समाजांच्या संयुक्त विद्यमाने घेण्यात आलेल्या या शिबिरात राज्यातील जवळपास ४० प्रशिक्षणार्थ्यांनी उत्साहाने भाग घेऊन वैदिक सोळा संस्कार, नित्यनैमित्यिक कर्म, बृहद्‌यज्ञ, शुद्ध वेदमंत्रोच्चारण आदींचे सुयोग्य प्रकारे प्रशिक्षण घेतले.

सोलापूरे वैदिक विद्वान पं. राजवीरजी शास्त्री, सभेचे उपदेशक पं. सुधाकरजी शास्त्री या पंडितद्वयांनी प्रशिक्षणार्थ्यांना अगदी सोप्या व प्रभावशाली पद्धतीने पौरोहित्यकर्मांचे प्रशिक्षण दिले. भजनोपदेशक पं. प्रतापसिंहजी चौहान यांनी मधुर व सारगर्भीत भजनांच्या माध्यमाने शिबिरात नवचैतन्य निर्माण केले, तर दररोजच्या ब्राह्ममुहूर्ती सभेचे आर्यवीर दल अधिष्ठाता श्री व्यंकटेशजी हालिंगे यांनी व्यायाम, योगासन व प्राणायामाचे प्रशिक्षण दिले.

तिन्ही आर्य समाजाचे सर्व पदाधिकारी अगदी तन्मयतेने हे शिबिर पूर्णपणे सफल करण्यात यशस्वी ठरले. निवास, भोजन व प्रशिक्षणाची व्यवस्था चांगल्या प्रकारची झाल्याने शिबिरार्थ्यांमध्ये नवा हुरूप दिसुन आला. सभेचे प्रधान स्वामी श्रद्धानंदजी, मंत्री राजेंद्र दिवे,सल्लागार डॉ. ब्रह्ममुनिजी, वेदप्रचार प्रमुख लक्ष्मणराव आर्य आदींनी शिविर काळात मार्गदर्शन केले.

(समारोपाचा विस्तृत वृतांत पुढील अंकात)

स्व. मुंडे यांच्या स्मरणार्थ वैदिक सत्संग संपन्न

किल्लेधारूर येथील सामाजिक कार्यकर्ते डॉ.श्री ज्ञानोबा मुंडे यांचे पिताश्री स्व. नरहरी शंकर मुंडे यांच्या तिसऱ्या पुण्यतिथी निमित्त त्यांच्या मूळगावी मौजे वानटाकळी (ता.परळी) येथे दि. २७ एप्रिल २०१३ रोजी वैदिक सत्संग पार पडला.

पं.नयनकुमार आचार्य यांच्या पौरोहित्याखाली झालेल्या स्मृतियज्ञात डॉ.श्री. व सौ. मुंडे यांच्यासह इतर बंधू सपत्नीक सहभागी झाले. पूर्णाहुती देतांना मुंडे कुटुंबातील सदस्यांनी दुर्गुण-दुर्व्यसनांपासून दूर राहुन सन्मार्गी राहण्याचा संकल्प सोडला. डॉ.ब्रह्ममुनिजी, सोममुनिजी, विज्ञानमुनिजी आदींनी मार्गदर्शन केले, तर पं. किशनसिंहजी आर्य यांनी भजन गायिले. यावेळी श्रद्धानंद गुरूकुल आश्रमातील वरील मुनिजनांसह सर्वश्री आर्यमुनिजी, स्वामी ज्ञानानंदजी, ब्रह्मचारी आणि धारूर येथील आर्यकार्यकर्ते सर्वश्री ॲड. प्रमोदजी मिश्रा, सोमनाथअप्पा आर्य आदी उपस्थित होते.

www.thearyasamaj.org

–महर्षी दयानंदांच्या आगमनापूर्वी भारताची दुर्दशा–

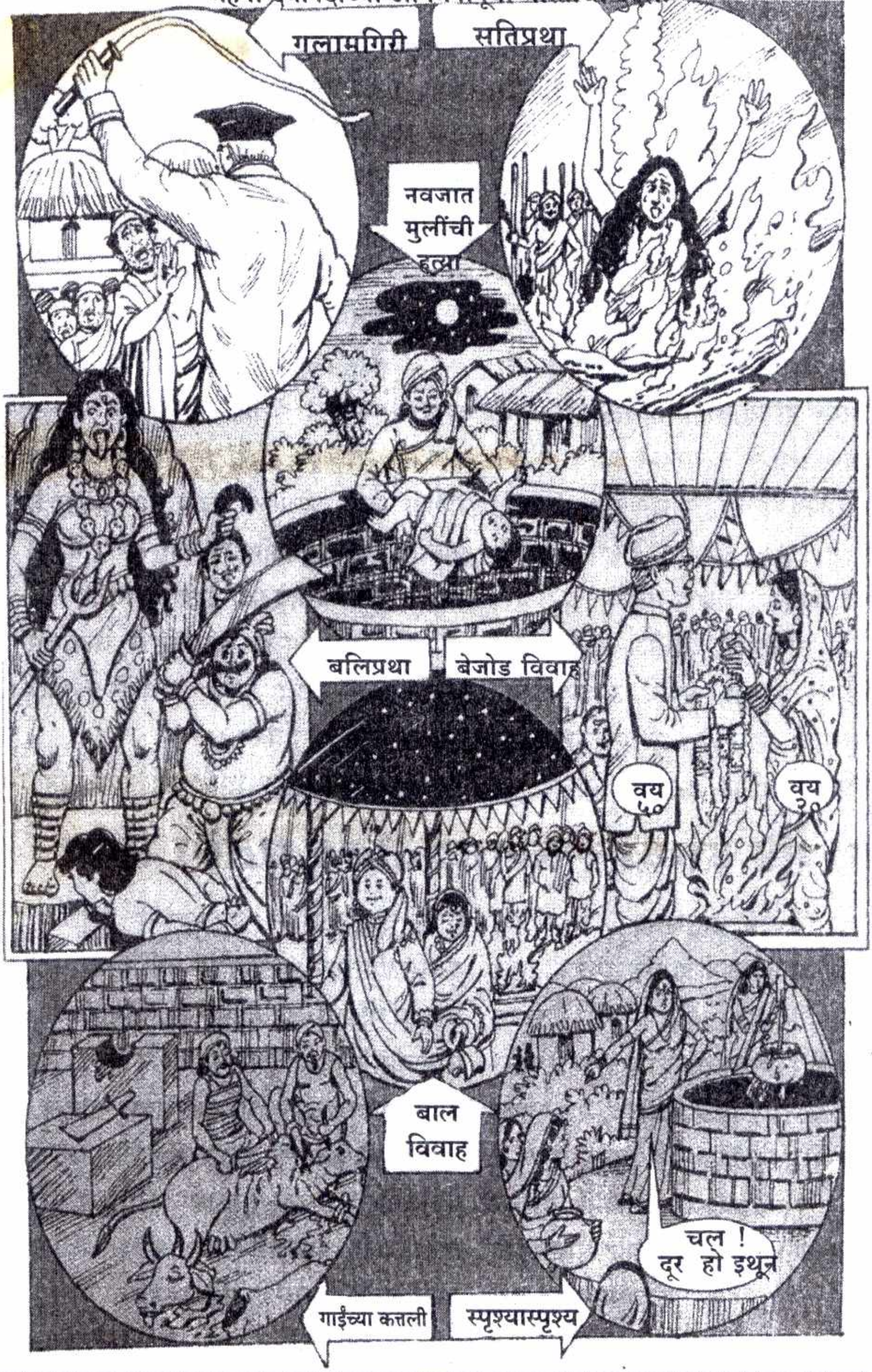

www.thearyasamaj.org

जन्म

फाल्गुन वद्य दशमी, विक्रम संवत् १८८१ तदनुसार १२ फेब्रुवारी १८२४ रोजी गुजरात राज्यांतर्गत मोरवी विभागातील टंकारा नावाचे एक छोटेसे गाव! तेथे कर्षणजी तिवारी हे औदीच्य कुलीन ब्राह्मण सद्गृहस्थ राहत होते. ते एक गर्भश्रीमंत शेतकरी होते. इंग्रज सरकार ने त्यांची महसुल अधिकारी म्हणून नियुक्ती केली होती. अमृताबेन या त्यांच्या धर्मपत्नी ! अशा या सत्वशील व धार्मिक दांपत्याच्या घरी एका सुंदर बाळाने जन्म घेतला. मूळा नक्षत्रात जन्मल्याने आई-वडिलांनी त्यांचे मूलशंकर असे नाव ठेवले. हाच सुकुमार बालक कालांतराने **महर्षी दयानंद सरस्वती** या नावाने इतिहासात ओळखला गेला.या महापुरूषाने संपूर्ण जगाला वैदिक ज्ञानाचा दिव्य प्रकाश दिला.

www.thearyasamaj.org

थोर समाजसुधारक महर्षी दयानंद सरस्वती

या जगात महापुरूष तर अनेक होऊन गेले, पण महर्षी स्वामी दयानंदांसारखे कोणीही नाहीत, कारण त्यांचे प्रेरक जीवन इतरांपेक्षा फारच वेगळे आहे. त्यांनी केवळ आपल्या देशातीलच नव्हे, तर विदेशातील विद्वानांनीही एक नवी दिशा दिली आहे. सत्पुषांच्या जीवनात शक्यतो एखाद्या घटनेमुळे बदल झालेले आढळून येतात. महर्षी दयानंदाबाबत ही तसेच घडले. शिवरात्री दिनी व्रत धारण करण्यासाठी मूलशंकरला त्यांचे वडील मंदिरात घेऊन गेले. तेथे त्याने पाहिले की एक उंदीर पिंडीवर चढून नैवेद्य खात आहे. तेव्हा त्याने विचार केला–

www.thearyasamaj.org

परली गुरुकुल में भव्य यज्ञशाला का शिलान्यास

याज्ञवल्क्य यज्ञशाला की आधारशिला रखते हुए प्रसिद्ध आर्य उद्योगपति श्री लखमसीभाई वेलानी (पुणे), दयाराम बसैये, उग्रसेन राठौर तथा मुनिवृंद आदि ।

शिलान्यास के अवसर पर श्री वेलानी, सौ. व श्री.बसैये, सौ.प्रज्ञा पुर्रे, श्री रामपालजी लोहिया तथा वानप्रस्थी गण ।

लातूर में 'पुरोहित प्रशिक्षण शिविर'

समापन समारोह में वैदिक विद्वान व प्र.प्रशिक्षक पं. राजवीरजी शास्त्री का सम्मान करते हुए श्री ओमप्रकाशजी पारशर

Reg. No. RNI No. MAHBIL/2007/7493
Postal No. L-2/18/RNP/16/Beed/2012-14

सेवा में,
श्री

षक -
न्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा,
आर्य समाज, परली वैजनाथ.
पिन ४३१ ५१५ जि.बीड. (महाराष्ट्र)

यह मासिक पत्र सम्पादक व प्रकाशक श्री मन्त्री, महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा वैदिक प्रिंटर्स, परली वैजनाथ इस स्थलपर मुद्रित कर 'महाराष्ट्र आर्य प्रतिनिधि सभा' कार्यालय 'आर्य समाज, परली वैजनाथ ४३१ ५१५ जि.बीड (महाराष्ट्र)' इस स्थान से प्रकाशित किया।

हैदराबाद स्वतंत्रता संग्राम के भूमिगत सेनानी, आर्य समाज, संभाजीनगर (औरंगाबाद) के पूर्व प्रधान

स्व.श्री नरेन्द्रसिंहजी संग्रामसिंहजी चौहान की

जन्म ३१ मार्च १९२८ — पावन स्मृति में 'वैदिक गर्जना' मासिक का रंगीन मुखपृष्ठ सस्नेह भेट — निधन १७ मार्च २०००

सौजन्य

जुगलकिशोर चुन्नीलाल दायमा	दयाराम राजाराम बसैये	ॲड.जोगेंद्रसिंह नरेंद्रसिंह चौहान
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

आर्य समाज, महर्षि दयानंद भवन, सरस्वती कालोनी, संभाजीनगर (औरंगाबाद)